



रशियन फेडरेशन में उत्तरी कॉकेशिया के ऊबड़-खाबड़ इलाकों में प्राचीन मीनारें अभी भी देखी जा सकती हैं, इंगश, चैंचन और वाइनैख लोगों द्वारा सदियों पहले शुरू की गई वास्तुकला परम्परा के मौन पहरेदार के रूप में। चार हजार सालों की अवधि में बनीं ये विशाल संरचनाएं आवास और रक्षा दोनों के लिए इस्तेमाल होती थीं। इस समय जो मीनारें बची हुई हैं, वो 13 वीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी के बीच बनाई गई थीं। अधिकतर इंगश मीनारें 6 से 12 मीटर के चौकोर 'बेस' पर बनी थीं जिनकी ऊँचाई 10 से 25 मीटर तक होती थी। इन मीनारों को बनाने के लिए, पत्थर के ब्लॉक्स को संभवतया चूना, चूना-मिट्टी या चूना-रेत मोर्टार से जोड़ा जाता था। मीनारों का निर्माण विस्तृत विधि-विधान के साथ सम्पन्न होता था, चाहे मीनार सुरक्षा के लिए हो या रिहाइश के लिए। जानवरों की बलि चढ़ाने के बाद, रिवाज के अनुसार, उनका खून नीव के पत्थर पर लगाया जाता था और 'मास्टर बिल्डर' की भूमिका को स्रहते हुए गीत व लोककथाएँ रची जाती थीं। इंगश परंपरा के अनुसार, मीनारों का निर्माण एक वर्ष के अंदर पूरा हो जाना होता था, अन्यथा, न केवल परिवार को कमजोर बल्कि मीनार बनाने वाले कारीगर को अयोग्य समझा जाता था। मीनार ढहने के गंभीर परिणाम होते थे, मीनार के मालिकों की प्रतिष्ठा को दाग लगता था और मुख्य मिस्त्री को भविष्य के काम मिलना मुश्किल हो जाता था। मीनारें अक्सर सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों, जैसे घाटी के प्रवेश, चौराहे या नदी के किनारों पर बनाई जाती थीं। मीनारों के लिए हिमस्खलन व भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं को झेल सकने वाले स्थानों को चुना जाता था। मीनारों के नैटवर्क की सहायता से पड़ोसी गांव, एक दूसरे पर लगातार निगरानी रखते। संकट के समय, मीनारों के बीच, संकेतों के माध्यम से सूचना का त्वरित आदान-प्रदान संभव होता था। आवासीय मीनारें दो से तीन मंजिला हुआ करती थीं। आवासीय मीनारों का भूतल, पशु धन को छाया देता था, जबकि दूसरी मंजिल पर लोग रहते थे। सबसे ऊपर वाली मंजिल पर खाने का सामान, कृषि औजार रखे जाते थे और किसी-किसी मीनार में तीसरी मंजिल पर बालकनी भी होती थी।

## गंगानगर शहर बारिश से जलमग्न, बाढ़ जैसे हालात

चौदह घंटे में तीन बार भारी बारिश आने से शहर के चारों ओर पानी ही पानी हो गया

श्रीगंगानगर, 7 जुलाई (का.सं.)। गंगानगर इलाके में पिछले चौदह घंटे में तीन बार तेज बारिश आने से शहर में चारों ओर पानी ही पानी हो गया। पानी निकासी नहीं होने के कारण बाढ़ जैसे हालात हो गए हैं। घर से बाहर निकले लोग शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक आवाजाही के लिए बारिश में फंस गए। कई वाहन बंद हो गए तो कहीं पानी निकासी आफत बनी। ई रिक्शा का संचालन काफी कम देखने को मिला। बरसाली पानी से ई रिक्शा ज्यादा खराब होते हैं, ऐसे में चालकों ने आवाजाही से दूरियां बनाये रखीं। वहीं मजबूरी में निकले लोगों को जलमग्न हुई सड़कों को पार करने में अड़चन आई। पानी निकासी के इंतजाम रामभरोसे रहे। हालांकि पानी निकासी के लिए नगर परिषद की टीमों ने प्रयास किए हैं लेकिन धरातल पर नजर नहीं आए। इस बीच, जिला प्रशासन का दावा है कि, बारिश जिला मुख्यालय पर 82 एम.एम. बारिश, चूनाबढ़ में 54 एम.एम., मिर्जेवाला में 58 एम.एम. बारिश हुई है

■ गंगानगर शहर मुख्यालय पर 82 एम.एम. बारिश एवं चूनाबढ़ में 54 एम.एम. बारिश दर्ज की गई।

■ शहर में पानी की निकासी नहीं होने के कारण बाढ़ जैसे हालात हो गए हैं, आवाजाही के लिए घर से बाहर निकले लोग बारिश और रास्तों पर पानी जमा होने के कारण घंटों बीच रास्ते में ही फंसे रहे।

जबकि सादुलशहर में 56 एम.एम. बारिश दर्ज की है। इसके अलावा सूरतगढ़, करणपुर, राजियासर में भी बरसात के समाचार है। जिला मुख्यालय पर रविवार को सुबह साढ़े छह बजे बरसात का दौर शुरू हो गया। करीब आठ बजे तक बरसी बारिश से शहर का अधिकांश एरिया जलमग्न हो गया। गौशाला मार्ग, मीरा मार्ग, सुखांडिया मार्ग, सूरतगढ़ मार्ग, पदमपुर रोड, रवीन्द्र पथ, गगन पथ, पुरानी आबादी के काफी इलाके पानी से पानी में नजर आए। इस बरसात से उमस भरी गर्मी से छुटकारा भले ही मिल गया हो लेकिन शहर के अधिकांश हिस्सों में

पानी भरवा हो गया है। इधर, ग्रामीण क्षेत्र में पानी के बिना मुरझाने के साथ दम तोड़ रही फसलों को नया जीवनदान मिला है। शहर में अमृत योजना के तहत सीवरेज कार्य चल रहे हैं। सीवरेज कार्य के तहत दर्जनों स्थानों पर सड़कों पर चैंबरस के लिए गड्डे खोद रखे हैं व निर्माण कार्य चल रहा है। रविवार को हुई तेज बारिश से गड्डे पानी से भर गए। अनेक गड्डों में सड़कों से पानी पहुंचता रहा। इन गड्डों के कारण हादसे की आशंका बनी रही। वहीं गंगासिंह चौक, मल्टीपरपज स्कूल और पुरानी शुगर (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

## रणथम्भौर में बाघ टी-58 की मौत

सवाई माधोपुर, 7 जुलाई (निस)। रणथंभौर अभयारण्य से रविवार को बाघ, टी-58 की मौत की दुःखद खबर सामने आई।

कार्यवाहक डीवीजनल फॉरेस्ट ऑफिसर मानस सिंह ने बताया कि बाघ टी-58, बाघिन 26 शमीली का बेटा है, जिसकी उम्र 13 साल थी। टाइगर टी-58 रविवार को शाम को

■ रविवार शाम 6 बजे टाइगर हिंदवाड के पास फलोदी रेंज में मृत पाया गया। मौत के कारणों का पता सोमवार को पोस्टमार्टम के बाद ही चल पाएगा।

6 बजे टाइगर हिंदवाड के पास फलोदी रेंज में मृत पाया गया। शव को राजबाग वन्य जीव मोचरी में रखवाया गया। जिसकी मौत के कारणों का सोमवार पोस्टमार्टम के बाद ही पता चल पाएगा। टाइगर की मौत बाघ संरक्षण एवं वन्य जीव प्रेमियों के लिए बड़ी दुःखद खबर है।



रणथम्भौर अभयारण्य में रविवार को बाघ टी-58 की मौत हो गई। रविवार शाम 6 बजे टाइगर हिंदवाड के पास फलोदी रेंज में टाइगर मृत पाया गया। बाघ टी-58, बाघिन 26 शमीली का बेटा है, जिसकी उम्र 13 साल थी।

## राहुल आज मणिपुर व असम जाएंगे

नई दिल्ली, 7 जुलाई (वार्ता)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सोमवार को पूर्वोत्तर की यात्रा पर रहेंगे जहां वे असम के बाढ़ पीड़ितों से मिलने के बाद मणिपुर के हिंसा पीड़ितों से भी मिलेंगे। कांग्रेस ने यह जानकारी देते हुए बताया कि गांधी सुबह असम के बाढ़

■ कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सोमवार को पूर्वोत्तर की यात्रा पर रहेंगे जहां वे असम के बाढ़ पीड़ितों से मिलने के बाद मणिपुर के हिंसा पीड़ितों से भी मिलेंगे।

पीड़ित कछार जिले के थलाई राहत शिविर में जाएंगे और बाढ़ पीड़ितों से मुलाकात करेंगे।

उन्होंने बताया कि उसके बाद गांधी सीधे मणिपुर जाएंगे जहां वह जिरिविम हायर सेकेंडरी स्कूल, मोहरंग के फुबाला हाई स्कूल के साथ ही मंडप, तूबांग चुराचंदपुर में पीड़ितों के राहत शिविरों में लोगों से मिलेंगे। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

## कांग्रेस विधायक दल की बैठक काल

जयपुर, 7 जुलाई (का.प्र.)। कांग्रेस विधायक दल की बैठक 9 जुलाई को आयोजित होगी। राजस्थान प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा कांग्रेस एवं इंडिया गठबंधन तथा बाप के नवनिर्वाचित

■ होटल मेरियेट (जवाहर सर्किल, जयपुर) में आयोजित समारोह में कांग्रेस सांसदों का सम्मान भी किया जायेगा।

सांसदों का स्वागत समारोह राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित किया जाएगा। सभी कार्यक्रम जयपुर में जवाहर सर्किल स्थित होटल मेरियेट में आयोजित होंगे।

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं प्रवक्ता स्वर्णिम चतुर्वेदी ने बताया कि 9 जुलाई को जयपुर के (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

## राहुल गांधी रेलगाड़ियों के लोको पायलट्स की "दुर्गति" के मुद्दे को संसद में उठायेंगे

राहुल गांधी ने दो दिन पहले लोको पायलट्स से मुलाकात की थी तब उन्होंने उन्हें अपनी दिक्कतें बताईं और कहा कि, उनका जीवन बहुत कठिन हो गया है। उनसे बहुत ज्यादा काम लिया जाता है, छुट्टी नहीं दी जाती है और उन्हें पर्याप्त आराम नहीं मिलता जो रेल दुर्घटनाओं की भी एक वजह है

नई दिल्ली, 7 जुलाई (वार्ता)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि मोदी सरकार ने लोको पायलटों के जीवन की रेल को पटरी से उतार दिया है और उनके जीवन को बहुत कठिन बना दिया है इसलिए वह इस मुद्दे को संसद में उठाएंगे।

राहुल गांधी दो दिन पहले नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर लोको पायलटों से मिले थे और उन्होंने लोको पायलट से उनसे अपनी दिक्कतें बताईं और कहा कि उनका जीवन बहुत कठिन हो गया है। उनसे बहुत ज्यादा काम लिया जाता है, छुट्टी

■ राहुल गांधी के लोको पायलट से मुलाकात का वीडियो कांग्रेस ने रविवार को अपने एक्स हैंडल पर जारी किया जिसमें पायलट अपनी समस्या राहुल गांधी को बता रहे हैं। कांग्रेस नेता ने उनकी समस्याएं सुनने के बाद कहा कि मोदी सरकार में लोको पायलटों का जीवन बेहद मुश्किल हो चुका है।

■ उन्होंने कहा, गर्मी से खौलते केबिन में बैठ कर लोको पायलट 16-16 घंटे काम करने को मजबूर हैं। लगातार और बिना छुट्टी के काम करने की वजह से लोको पायलटों की शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं।

नहीं दी जाती है और उन्हें पर्याप्त आराम नहीं मिलता जो रेल दुर्घटनाओं की भी एक वजह है। गांधी के लोको पायलट से मुलाकात का वीडियो कांग्रेस ने रविवार को अपने ट्विटर हैंडल पर जारी किया जिसमें पायलट अपनी

समस्या गांधी को बता रहे हैं। कांग्रेस नेता ने उनकी समस्याएं सुनने के बाद कहा कि मोदी सरकार में लोको पायलटों का जीवन बेहद मुश्किल हो चुका है। कांग्रेस नेता ने कहा, लगातार और बिना

छुट्टी के काम करने की वजह से लोको पायलटों की शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं। इंडिया समूह लोको पायलटों के अधिकारों और वर्किंग कंडीशंस को बेहतर किए जाने के लिए संसद तक आवाज उठाएगा। नरेंद्र मोदी की

सरकार में लोको पायलटों के जीवन की रेल पूरी तरह पटरी से उतर चुकी है। उन्होंने कहा, गर्मी से खौलते केबिन में बैठ कर लोको पायलट 16-16 घंटे काम करने को मजबूर हैं। जिनके भरोसे करोड़ों जिंदगियां चलती हैं उनकी अपनी जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं रह गया है। चूरिनल जैसी बेसिक सुविधाओं से भी वंचित लोको पायलट्स के न काम के घंटों की कोई लिमिट है और न ही उन्हें छुट्टी मिलती है जिसके कारण वह शारीरिक और मानसिक रूप से टूट कर बीमार हो रहे हैं। ऐसे हालात में लोको पायलटों से गाड़ी चलवाना उनकी और यात्रियों की जान को जोखिम में डालना है।

## विचार बिन्दु

दोष परायें देखकर चालत हसंत-हसंत,  
अपने याद ना आवई जिनका आदि ना अंत। -कबीर

## एक-दूसरे के पूरक हैं सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष!

यह बात अनेक बार कही जा चुकी है संसद की एक मिनट की कार्यवाही पर कितना पैसा खर्च होता है! जितना पैसा संसद की कार्यवाही पर खर्च होता है, उतना तो नहीं लेकिन उससे कम राज्यों की विधानसभाओं की कार्यवाही पर भी खर्च होता है। कहने की जरूरत नहीं, लेकिन कहना भी है कि यह सारा पैसा जनता की अर्थात् आपकी-हमारी जेब से जाता है। और जब हम पैसा खर्च कर रहे हैं तो हमारी यह अपेक्षा भी अनुचित नहीं कही-मानी जानी चाहिए कि इस पैसे का सदुपयोग हो!

संसद या विधानसभाओं, जिन्हें संयुक्त रूप से विधायिका कहा जाता है, का मुख्य काम है शासन चलाने के लिए नीतियां बनाना, और यह देखना कि वे नीतियां ठीक से क्रियान्वित हो रही हैं या नहीं! सत्ता पक्ष नीतियां तय करता है और उन्हें बनाता व लागू करता है तथा प्रतिपक्ष इस बात का ध्यान रखने की कोशिश करता है कि यह सब न्यायसंगत तरीके से हो रहा है या नहीं! असल में तो सत्ता पक्ष व प्रतिपक्ष एक-दूसरे के शत्रु नहीं, पूरक हैं। एक के अर्थों में काम की तरफ दूसरा ध्यान आकर्षित करता है। अगर सत्ता पक्ष इस बात पर इतराता है कि उसे जनता ने चुना है तो उसे इस बात को भी याद रखना चाहिए कि प्रतिपक्ष को भी उसी जनता ने चुना है। एक-दूसरे के प्रति सद्भाव और सहयोग रखकर ही दोनों अपनी-अपनी भूमिका का सही निर्वहन कर सकते हैं।

देखने की बात यह है कि क्या सभ में ऐसा हो पा रहा है? लगभग हर जगह, मतलब संसद के दोनों सदनों और राज्यों की अधिकांश विधानसभाओं में, सदनों का ज्यादा समय हंगामों की भेंट चढ़ जाने लगा है। यह प्रवृत्ति पहले कम थी, इधर बहुत बढ़ गई है। सत्ता पक्ष का आरोप होता है कि प्रतिपक्ष सदन की कार्यवाही नहीं चलने दे रहा है जबकि प्रतिपक्ष कहता है कि उसे अपनी बात कहने के अधिकार से वंचित रखा जा रहा है। अगर वह अपनी बात ही न कह सके तो उसके होने का औचित्य क्या है? दोनों के बीच बहुत बार तो टकराव व्यवस्थागत मुद्दों को लेकर होते हैं और बहुत बार एक-दूसरे के व्यवहार और सोच को लेकर होते हैं। सत्ता पक्ष अपनी कोई आलोचना नहीं सुनना चाहता है, उसे सुनकर उसका जवाब देना तो बहुत दूर की बात है। और इसी तरह प्रतिपक्ष सत्ता पक्ष के सकारात्मक पहलु को सिरे से खारिज करने लगता है। बात केवल यही तक सीमित नहीं रह जाती है। भाषा और व्यवहार की सारी मर्यादाएं तार-तार होने लगी हैं। एक आम नागरिक यह अपेक्षा करता है कि जिसे उसने चुनकर भेजा है वह सदन में जाकर गरिमापूर्ण और जिम्मेदारी भरा व्यवहार करेगा लेकिन बहुत बार उसकी यह अपेक्षा पूरी नहीं होती है। माननीयों का जो बरताव हम अपने टेलीविजन के पर्दे पर देखते हैं उसे किसी भी तरह माननीयोंचित नहीं कहा जा सकता।

एक समय था जब संसद और विधानसभाओं की बहसें हमें बहुत कुछ सिखाती थीं। हमारे निर्वाचित जन प्रतिनिधि उन प्रतिनिधि पूरी तैयारी के साथ सदन में जाते थे और गरिमा व शालीनतापूर्वक अपनी बात कहते थे। ऐसा नहीं है कि तब किसी तरह की आलोचना नहीं होती थी। बहुत तीखी और ध्वस्त कर देने वाली आलोचना भी होती थी, लेकिन उस आलोचना का भी एक स्तर होता था, जिनकी आलोचना की जाती थी उनमें भी यह उदारता होती थी कि वे उस आलोचना को सुनते और गुनते थे, और अक्सर अपने पर उसका माकूल जवाब भी देते थे। आलोचना करने वाला भी धैर्य पूर्वक उस जवाब को सुनता था। वह ज़माना सीधे प्रसारण का नहीं था, इसलिए हम तक वह सारा विमर्श मुद्रण माध्यमों के जरिये ही पहुंचता था। लेकिन हमें वह बहुत रोचक और शिक्षा देने वाला लगता था। आज जब हम सदनों की कार्यवाही लाइन देखते हैं, कुल मिलाकर प्रतिक्रिया यह होती है कि इसे देखो ही क्यों? चुनाव जीतने पर जिनके प्रति मन में सम्मान का भाव पैदा होता था, उनका व्यवहार देखकर वह सारा सम्मान लुप्त हो जाता है। जैसा मैंने पहले कहा, जब संसद या विधानसभाओं में हो-हल्ला होता है, प्रायः सत्ता पक्ष यह आरोप लगाता है कि प्रतिपक्ष सदन नहीं चलने दे रहा है। यहां दो बातें विचारणीय हैं। एक तो यह कि सदन की कार्यवाही चले, यह सुनिश्चित करना किसका दायित्व है: सत्ता पक्ष का या प्रतिपक्ष का? अगर आप यह जवाब दे रहे हैं कि दोनों का, तो भी यह सवाल अपनी जगह रहेगा कि प्राथमिक दायित्व किसका है? प्रतिपक्ष सहयोग करे यह सुनिश्चित करने का दायित्व सत्ता पक्ष का है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। दूसरी बात यह कि भला प्रतिपक्ष की इस बात में कोई रूचि क्यों हो सकती है कि सदन न चले? उसका तो सारा हित सदन के चलने में निहित है। सदन चले और प्रतिपक्ष अपनी बात कहे, सरकार को कटघरे में खड़ा

एक समय था जब संसद और विधानसभाओं की बहसें हमें बहुत कुछ सिखाती थीं। हमारे निर्वाचित जन प्रतिनिधि पूरी तैयारी के साथ सदन में जाते थे और गरिमा व शालीनतापूर्वक अपनी बात कहते थे। ऐसा नहीं है कि तब किसी तरह की आलोचना नहीं होती थी। बहुत तीखी और ध्वस्त कर देने वाली आलोचना भी होती थी। आलोचना करने वाला भी धैर्य पूर्वक उस जवाब को सुनता था।

करे - इससे बेहतर बात उसके लिए क्या हो सकती है? सदन के न चलने से हानि तो प्रतिपक्ष की ही है। अब इसी बात को दूसरे कोण से भी देखें। अगर सदन ठीक से चले और प्रतिपक्ष अपनी बात कह सके तो ज़ाहिर है कि सरकार की बहुत सारी खामियां सामने आएंगी। सरकार को, आज के माहौल वाली सरकार को, भला यह बात क्यों खोजनी होगी? तो कोशिश तो उसकी होगी कि सदन की कार्यवाही न चले। बहुत बार तो यह भी लगता है कि सत्ता पक्ष प्रतिपक्ष की आलोचना से बचने के लिए खुद इसी रीतियों में पैदा करता है जिससे सदन में हो हल्ला हो, प्रतिपक्ष अपनी बात न कह सके और अस्थवस्था की आड लेकर सत्ता पक्ष सदन की कार्यवाही स्थापित कर सके।

असल में हमने पिछले कुछ बरसों में देखा है कि सरकारें, चाहे वे किसी भी दल की क्यों न हों, ज़्यादा से ज़्यादा घमंडी और अहास्ति होती जा रही हैं। अपने खिलाफ कुछ भी सुनना उन्हें रास नहीं आता है। विरोध और असहमति की हर आवाज़ को कुचलना उनके स्वभाव का हिस्सा बन चुका है। यह आकस्मिक नहीं है कि लोकसभा के पिछले सत्र में एक साथ बहुत सारे विधायकों को निष्कासित किया गया। क्या अनुचित व्यवहार केवल प्रतिपक्ष के सांसद ही करते रहे हैं? क्या सत्ता पक्ष के एक भी सांसद का व्यवहार ऐसा नहीं रहा होगा कि उस पर भी निष्कासन की कार्यवाही की जाती? क्या यह एक कट्टर यथार्थ नहीं है कि अब सरकारें किसी भी तरह की, कितनी भी छोटी से छोटी असहमति को सहन करने को तैयार नहीं हैं। ऐसे में सवाल यह भी उठना चाहिए कि फिर चुनाव का और पूरी विधायिका का तामझाम क्यों? जब सत्ता पक्ष को अपनी मनमानी ही करनी है, जब उसे प्रतिपक्ष की कोई बात सुननी ही नहीं है तो फिर लोकतंत्र का अर्थ ही क्या रह जाता है?

सत्ता पक्ष प्रायः प्रतिपक्ष पर यह आरोप लगाता है कि वह नकारात्मक, विध्वंसवादी और असहयोगी है। इन आरोपों के आलोक में यह परीक्षण किया जा सकता है कि सत्ता पक्ष प्रतिपक्ष से क्या अपेक्षा करता है! सकारात्मक प्रतिपक्ष क्या और कैसा हो सकता है? क्या सत्ता पक्ष प्रतिपक्ष से भी यह अपेक्षा करता है कि वह सत्ता पक्ष की आवाज़ में आवाज़ मिलाकर बात करेगा? सहयोग से उसका क्या अभिप्राय होता है? गैर विध्वंसवात्मक व्यवहार कैसा हो सकता है? क्या यह समझा जाए कि सत्ता पक्ष यह अपेक्षा करता है कि उसका नाम भले ही प्रतिपक्ष हो, काम वह सत्ता पक्ष की तरह करे! क्या यह अपेक्षा उचित है? क्या इस तरह कोई स्वस्थ और जीवंत लोकतंत्र संभव है?

मुझे बहुत रोचक तो यह लगता है कि सत्ता पक्ष बार-बार प्रतिपक्ष से कहता है कि उसे अमुक मुद्दे पर राजनीति नहीं करनी चाहिए! इससे अधिक हास्यास्पद बात और क्या हो सकती है? जो लोग राजनीति करके चुन कर आए हैं, वे अगर राजनीति नहीं करेंगे तो फिर करेंगे क्या? और क्या राजनीति कोई बुरी चीज है? सत्ता पक्ष राजनीति न करके कोई अन्य कार्य करता है? भाई, राजनीति में है तो राजनीति करेंगे ही। करनी भी चाहिए।

असल में पिछले कुछ बरसों में बहुत नियोजित तरीके से प्रतिपक्ष को दबाया, कुचला और अदृश्य किया गया है। सत्ता ने अपने घमंड में यह सोचना ही बंद कर दिया कि वह कुछ गलत कर भी सकती है। अगर किसी ने उसके कामों पर सवाल उठाए तो उसने अपनी भांडे की फौज से उनको दबा देने के हर मुमकिन प्रयास करके उसे हीसलो को तोड़ा। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं चल सकता। इस बार जैसे देश ने एक करवट ली है और जिस प्रतिपक्ष को अनेक प्रयासों से लस्त-पस्त कर दिया था वह फिर से उठ खड़ा हुआ है। यह बात सत्ता पक्ष को पसंद नहीं आ रही है। संसद की इन दिनों की अनेक बातें इस बात की चुगली कर रही हैं कि सत्ता पक्ष अभी इस बात को पचा नहीं पा रहा है कि कोई उसके खिलाफ प्रतीक भी करे! सत्ता पक्ष के प्रमुख चेहरों ने जिस भाषा और तैवर के साथ अपनी बात कही है और प्रतिपक्ष का उपहास किया है उसने हमारे मुँह का स्वाद बिगाड़ा है।

हम तो एक ऐसे लोकतंत्र की कल्पना करते हैं जिसमें सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों एक-दूसरे के प्रति सम्मान और सद्भावना से परिपूर्ण हों और यह मानकर काम करें कि वे एक-दूसरे के पूरक हैं। यह तभी संभव हो सकता है जब सत्ता पक्ष प्रतिपक्ष को अपना शत्रु और अपने से कमतर मानना और आंकना बंद करे।

-अतिथि संपादक,  
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल  
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

## भगवान शिव जगत के प्रथम जीवंत पटकथा रचनाकार



प्रो. वीर बहादुर सिंह

कहते हैं कि एक बार भगवान शिव मां पार्वती के साथ हिमालय में किसी स्थान पर मौन मुद्रा में आसन लगाए बैठे हुए थे, उनके दिमाग में एक कथा ने जन्म लिया तो समाधि से निवृत्त होकर माता पार्वती से पूछा कि मेरे दिमाग में एक कहानी उपजी है जो बड़ी रोचक है तुम यदि सुनना चाहो तो सुना सकता हूँ लेकिन सुनने की शर्त एक है कि कहीं भी बीच में संदेह मत करना।

माता के राजी होने पर शिव जी ने कथा आरम्भ की। यह राम कथा थी जो उन्होंने प्रथम बार सुनायी थी, बाद में यही कथा महर्षि वाल्मीकि जी ने

रामायण के रूप में काव्यबंद की और फिर महात्मा तुलसीदास ने रामचरित मानस के रूप में। बीच की अवधि में कई रामायणों विभिन्न लोगों ने रची, परन्तु उपरोक्त दो ग्रन्थ ही प्रसिद्धि पा सके। इन पटकथाओं की भिन्नता केवल भाषा की है, वाल्मीकि जी ने संस्कृत भाषा और तुलसीदास जी ने हिंदी अवधी का मिश्रण अपनाया, जो कि उनके काल में पूरे उत्तर भारत में बोली जाती थी। कथानक दोनों रचनाओं में लगभग समान ही है। और वही है जो भगवान शिव ने माता पार्वती को सुनाया। यह कथा बहुत ही विलक्षण है।

उपरोक्त वर्णित दोनों काव्य ग्रंथ आज भी बने हुए हैं। इस कथा की विलक्षणता ये है कि भगवान शिव ने कथानक के अनुसार सभी पुरुष और स्त्री पात्रों को भी एक काल में उनके किरदार के अनुसार जर्मी पर उतार दिया। यथा-राम, रावण, राजा दशरथ, जनक, कैकेय, कौशल्या, सुमित्रा, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, बिभीषण, त्रिजटा, मंदोदरी, सुग्रीव, अंगद, जामवंत, निषादराज, केवट, चित्रकूट, किष्किंधा, स्वयं प्रभा, सूर्यनखा, मारीच, गीधराज-जटायु, सम्पाती, मंथरा इत्यादि अनेक पात्र जो इस

पटकथा में शामिल हैं, धरती पर जन्म लिए। कहीं कोई असमंजस अथवा उलटफेर नहीं, भगवान शिव द्वारा देखा गया मानसिक चित्रण हृदय धरती पर वैसे ही पात्रों ने निभाया जैसा उन्होंने समाधि में देखा और फिर माता को सुनाया। क्या इतना पढ़कर नहीं लगता कि यह कथानक वर्तमान काल के चलचित्रों की भाँति ही जगत के विशाल परदे पर कभी धरती पर घटित हुआ? विचार करके देखिये।

यह कथानक जगत में विभिन्न दृष्टिकोणों से अपनी विशेषताओं के कारण काफी प्रचलित हुआ यहाँ तक कि इसके सुनने मात्र से लोगों के दुःख नष्ट होने लगे। और स्वयं भगवान शिव को सती की मृत्यु पश्चात् असीम विकलता से पार आने के लिए महर्षि नारद जी ने उन्हें नील पर्वत पर जाकर काकभुसुंडि द्वारा कही जाने वाली कथा सुनने का सुझाव दिया था जिससे भगवान शिव अपनी प्रिय पत्नी के वियोग के दुःख से छूट गए थे। काकभुसुंडि द्वारा कही कथा राम कथा थी। क्या सच है क्या नहीं मेरी बुद्धि से यह परे की चीज है। लेकिन फिर कालान्तर में माता सीता को भी लंका में रावण की कैद में रहते असीम दुःख

से इस राम कथा के सुनने से ही विरह संताप से मुक्ति मिली थी। ये कहानी तन बाबा हनुमान जी ने उन्हें एक पेड़ पर बैठ सुनाई थी जिससे माता सीता का विरह दुःख मिट गया था। वर्तमान में भी किसी प्राणी की शव यात्रा में लोग 'राम नाम सत्य है' बोलते हुए शव को शमसान दाह संस्कार के लिए ले जाते हैं। कहने का तात्पर्य ये है कि सनतानियों में अब राम नाम अथवा कथा पूर्ण या केवल सुन्दर कांड कथा सुनने-सुनाने का काफी प्रचलन हो गया है।

अब एक दूसरा पक्ष कि सनतानियों के तीन भगवान यथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश प्रमुख रूप से कहे जाते हैं। ब्रह्मा जी जीवों की उत्पत्ति करने वाले अथवा प्राणियों के जनक माने जाते हैं जबकि विष्णु जी पालनहार और महेश या शिव संघार/विनाश के भगवान माने जाते हैं, भगवान शिव को लोग बहुधा कल्याणकारी भगवान भी मानते हैं और इसलिए उनकी व्यापक रूप से पूजा-अर्चना होती है। भगवान ब्रह्मा जी के कार्य से कोई मतभेद नहीं है उनकी पूजा-अर्चना अलग की जा सकती है जबकि विष्णु जी और शिव जी एक-दूसरे को पूजते आराधना करते दीखते हैं। ऐसा क्यों मेरी समझ से परे है। कहते

हैं भगवान शिव राम जन्म और कृष्ण जन्म के अवसर पर उनके दर्शन के लिए धरती पर आये थे। जबकि श्री राम ने लंका पर चढ़ाई के समय शिव लिंग स्थापित कर समुद्र तट पर रामेश्वरम में भगवान शिव की पूजा की थी। दोनों भगवान के मध्य कितना सामंजस्य है मैं नहीं कह सकता? इस पक्ष पर अपनी अपनी अनुभूति से लोग निष्कर्ष निकालें।

अवतार की दृष्टि से भगवान ब्रह्मा का कोई अवतार ज्ञात नहीं है। वहीं भगवान विष्णु के कई अवतार यथा राम, कृष्ण, आदि दस अवतार बताये जाते हैं लेकिन ब्रह्मा जी का कोई अवतार मुझे ज्ञात नहीं है। वहीं भगवान शिव के रूद्र रूप में बाबा हनुमान जी जगत प्रसिद्ध हैं और सर्वत्र धर्म से परे व्यापक रूप से पूजे जाते हैं। उनकी एक अलग विशिष्टता है जिस पर अलग से बहुत कुछ कहा और लिखा जा सकता है। लेखक आशा करता है की उपरोक्त वर्णन पाठकों को रुचिकर लगेगा।

-प्रो. वीर बहादुर सिंह,  
खाद्य विज्ञ, पूर्व कुलपति,  
महाराज प्रतापकृषि एवं  
प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय,  
उदयपुर

## मेघ मल्हार की तर्ज पर रंग मल्हार में छाई इन्द्र धनुष के रंगों की छटा

"अन्तर्राष्ट्रीय रंग मल्हार-2024" का आयोजन, वरिष्ठ, युवा एवं बाल कलाकारों ने स्वच्छता के प्रति एग्रीन पर इन्द्र धनुषी रंगों की छटा बिखेरी

भीलवाड़ा, (निर्स)। स्थानीय आकृति कला संस्थान भीलवाड़ा, जिला प्रशासन भीलवाड़ा एवं एन.एन.जे. समूह के सहयोग से आयोजित "अन्तर्राष्ट्रीय रंग मल्हार-2024" का आयोजन रविवार को हुआ। स्थानीय ग्रामीण हाट की कला दीर्घा में शहर के 100 से अधिक वरिष्ठ, युवा एवं बाल कलाकारों ने स्वच्छता के प्रति एग्रीन पर इन्द्र धनुषी रंगों की छटा बिखेरी।

जानकारी देते हुये संस्थान के सचिव कैलाश पालिया ने बताया कि शहर के 125 वरिष्ठ, युवा एवं बाल कलाकारों ने अपनी-अपनी शैली में एग्रीन पर चित्रांकन कर भगवान इन्द्रदेव से मेघ मल्हार की तर्ज पर रंग मल्हार के माध्यम से पानी की कमी ना हो, शांति एवं सद्भाव बना रहे आदि की कामना की। प्रत्येक कलाकार ने एक से बढ़कर एक चित्रांकन किया, जिसमें भारत की लोक चित्र शैलियां, राजस्थानी संस्कृति, पर्यावरण, स्वच्छता आदि विषयों पर चित्रांकन किया। इस आयोजन में 90 वर्ष तक से लेकर सबसे कम 8 वर्ष की भूवी



'अन्तर्राष्ट्रीय रंग मल्हार-2024' में शहर के वरिष्ठ, युवा एवं बाल कलाकारों ने भाग लिया।

केसवानी व लाईशा कोठारी ने भी एग्रीन पर चित्रांकन किया। यह आयोजन भीलवाड़ा के अलावा चित्तौड़गढ़, बीकानेर, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, अजमेर, नाथद्वारा, गुजरात, मध्यप्रदेश, मुम्बई, दिल्ली आदि शहरों के साथ-साथ 20 देशों

के लगभग 4000 से अधिक कलाकार ऑनलाईन व ऑफ लाईन माध्यम से जुड़े। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी लक्ष्मीनारायण डाड, एन.एन.जे. ग्रुप के ओएसडी गुजरात, मध्यप्रदेश, मुम्बई, दिल्ली आदि शहरों के साथ-साथ 20 देशों

के लगभग 4000 से अधिक कलाकार ऑनलाईन व ऑफ लाईन माध्यम से जुड़े। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी लक्ष्मीनारायण डाड, एन.एन.जे. ग्रुप के ओएसडी गुजरात, मध्यप्रदेश, मुम्बई, दिल्ली आदि शहरों के साथ-साथ 20 देशों

के लगभग 4000 से अधिक कलाकार ऑनलाईन व ऑफ लाईन माध्यम से जुड़े। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी लक्ष्मीनारायण डाड, एन.एन.जे. ग्रुप के ओएसडी गुजरात, मध्यप्रदेश, मुम्बई, दिल्ली आदि शहरों के साथ-साथ 20 देशों

■ चित्रांकन कर भगवान इन्द्रदेव से मेघ मल्हार की तर्ज पर रंग मल्हार के माध्यम से पानी की कमी ना हो, शांति एवं सद्भाव बना रहे आदि की कामना की

वालकिशन गौगिड, इकबाल हुसैन, ज्योति पारीक, दीपिका पाराशर, सीमा सांखल, माही मूंदड़ा, खुशी कोठारी, दृष्टि जैन, तुषी समलानी, मितिशा अग्रवाल, कोमल केली, रञ्जु प्रजापत, राजेश जोशी, सांची माहेश्वरी, अनुष्का पाराशर, आनुवृती जैन, उमंग उपाध्याय, आयुष राठीड़िया, रिया छपरवाल, अंकिता बैरवा, बबलू रेगर, भूमि केशवानी, सिद्धी केशवानी, हर्ष सोनी, अनवेशा सोनी, हर्षिता शर्मा, लोकेश खटीक, शांतिलाल गाडी, हिटन्द्र शर्मा, वैदिका शुक्ला, अक्षपरी चुण्डावत, नवीन कुमार माली, लोकेश खटीक, आर्विन जायसवाल सहित 125 कलाकारों ने भाग लिया।

## ग्राम काशीपुरा में महिला मनरेगा श्रमिकों ने बदली तस्वीर

मसूदा, (निर्स)। मनरेगा योजना ने मसूदा उपखण्ड क्षेत्र की मनरेगा श्रमिक महिलाओं ने अपनी व परिवार की काया ही पटल कर रख दी। परिवार का खर्च व बच्चों की पढ़ाई आदि का बोझ खुद उठा रही मनरेगा श्रमिक महिलाओं ने बता दिया कि वह किसी क्षेत्र में कमजोर नहीं है।

मसूदा पंचायत समिति की ग्राम पंचायत देवपुरा का ग्राम काशीपुरा शहरी क्षेत्र से लगभग 25 किलोमीटर दूर पहाड़ियों में स्थित है जहां मजदूरी काम रोजगार का अभाव है। महात्मा गांधी महानरेगा योजना के अंतर्गत पिछले 5 सालों से ग्राम की मुखिया वार्डपंच सुरमा गौड़ गोपाल फौजी के कुशल नेतृत्व से हर वर्ष योजना के तहत 100 दिन का काम रोजगार मिल रहा है जिससे गांव की तस्वीर ही बदल गई है। गांव के कई परिवार रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन करने से रुक गए हैं। पिछले 5 सालों से गांव में ही योजना के तहत



ग्राम काशीपुरा में मनरेगा योजना के अंतर्गत 5 साल से हर वर्ष 100 दिन का रोजगार मिल रहा है।

■ घर का खर्च उठाने, बच्चों की पढ़ाई के साथ बदला घर का माहौल

पर्याप्त रोजगार काम मिल रहा है, जिससे अपना परिवार का खर्च पालन-पोषण करने में कोई परेशानी नहीं हो रही है। हर वर्ष 100 दिन पूर्ण होने के साथ ही गांव में कई विकास कार्य हो रहे हैं मनरेगा श्रमिक शांति, बनी, शहनाज, संतोष, मदीना, केली, रकमा जमना आफू, फेकी, कोया, मंजू सीता, वार्ड पंच सुरमा का इनका कहना है कि पिछले 5 सालों से हर साल 100 दिन का रोजगार मिल रहा है जिससे हमें परिवार चलाने में कोई परेशानी नहीं हो रही है। गांव में ही पर्याप्त रोजगार मिलने पर सभी नरेगा श्रमिकों ने वार्ड पंच सुरमा परी गोपाल फौजी व सरपंच शमीम हैदर को धन्यवाद दिया।



पंडित अनिल शर्मा

### राशिफल

सोमवार 8 जुलाई, 2024

आषाढ मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2081, पुष्य नक्षत्र प्रातः 6:03 तक, पंच योग रात्रि 2:06 तक, तैत्तिल करण साय 5:34 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेघ, बुध-कर्क, गुरु-वृष, शुक-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः 6:03 तक है। आज से मुहर्रम मु. मास है। हिजरी सन् 1446 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:25 तक, शुभ 9:07 से 10:49 तक, चर 2:14 से 3:56 तक, लाभ-अमृत 3:56 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:20

**मेघ**  
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। चलते व्यवसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यवसायिक आय में वृद्धि होगी।

**तुला**  
व्यवसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। व्यवसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**वृष**  
व्यवसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यवसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी। आय में वृद्धि होगी। संचावित धन प्राप्त होगा।

**वृश्चिक**  
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेगी। आर्थिक स्थिति में विलम्ब हो सकता है। मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**मिथुन**  
व्यवसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। नौकरपेशा व्यक्तियों को बाहर जाना पड़ सकता है और अतिरिक्त कार्य की जिम्मेदारी मिल सकती है।

**धनु**  
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

**कर्क**  
व्यवसायिक कार्यों को प्रार्थनिकता से करने का प्रयास करें। व्यवसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**मकर**  
परिवार में आपसी सहयोग-जमन्य बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यवसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**सिंह**  
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**कुंभ**  
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेगी। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यवसायिक वार्ता सफल रहेगी।

**कन्या**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यवसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**मीन**  
व्यवसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यवसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

**मां के नाम से पेड़ लगाने का लिया प्रण**

भरतपुर (निस)। सर्व ब्राह्मण महासभा के जिला कार्यालय चिचाना हाऊस पुष्प वाटिका कॉलोनी, भरतपुर पर जिलाध्यक्ष ताराचंद शर्मा चिचाना की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सर्वप्रथम महामंत्री भोगीराम शर्मा द्वारा यह प्रस्ताव रखा गया कि बरसात का मौसम है। इस समय पर्यावरण सुधार संबंधी बिन्दु पर विचार विमर्श किया जाएगा। विचार विमर्श के बाद वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुनेन्द्र शर्मा आदि ने एक मत होकर कहा कि पेड़ लगाने का अभियान चलाया जाना चाहिए और यह निरन्तर बरसात के मौसम में चलाना चाहिए। जिलाध्यक्ष ताराचंद शर्मा चिचाना ने कहा कि हम सभी को मां के नाम एक पेड़ लगाने का संकल्प अभी लेना चाहिए और हो सके तो प्रतिदिन एक पेड़ का एक पेड़ को मां के नाम से अवश्य लगाना चाहिए। सभी ने एक मत से प्रस्ताव का समर्थन किया और संकल्प भी लिया कि सभी मां के नाम से एक पेड़ अवश्य लगायेंगे। इसी के साथ पौधारोपण अभियान भी शुरू किया। बैठक में जिलाध्यक्ष ताराचंद शर्मा चिचाना, जिला महामंत्री भोगीराम शर्मा, शहर अध्यक्ष शिवम लवानिया, उपाध्यक्ष हेमराज शर्मा, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश शर्मा, शहर महामंत्री सागर चतुर्वेदी, शहर उपाध्यक्ष, अंकुर टोटपुर, उपाध्यक्ष मुनेन्द्र शर्मा, शहर मंत्री एड. भानू शर्मा आदि उपस्थित रहे।

**भाजपा जिला अध्यक्ष सहित पार्टी पदाधिकारियों ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण करते हुए उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया।**

करोली (नि.स.) भाजपा जिला अध्यक्ष सहित पार्टी पदाधिकारियों ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधा रोपण करते हुए उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया।

**51 पौधे लगाकर पार्टी की सुरक्षा का संकल्प लिया**

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी एवं राजस्थान भाजपा महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती रक्षा भंडारी



करोली में भाजपा कार्यकर्ताओं ने एक पौधा मां के नाम अभियान के तहत पौधा रोपण किया।

प्रोग्राम आदि पर 51 पौधे लगाकर पौधों की सुरक्षा करने का संकल्प लिया। साथ में सपोटरा देहात, कुडगांव, महमदपुर आदि से मेधा, स्वाति नौतू, बानों, केलाशो, पिस्ता गुड्डा रेखा, राजकुमारी, अन्नपूर्णा, अंजलि, माला, एडवोकेट आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

शोभा, संतोष, हेमलता, शिमला, प्रियंका, रामकली, गीता आदि महिला टीम के साथ भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इसमें अलावा भाजपा शहर मंडल करोली अध्यक्ष आशुतोष तिवारी के नेतृत्व में भाजपा शहर मंडल कि ओर से भारतीय जन संघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी को जन्म जयंती के अवसर पर एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि विधानसभा संयोजक एवं एक पेड़ मां के नाम के जिला संयोजक योगेश शर्मा उर्फ योगी रहे। शिकारगंज शक्ति केंद्र पर वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया इसमें सैकड़ों पौधे लगाये गये इस दौरान मंडल महामंत्री आशीष जैन, शक्ति केंद्र संयोजक धन सिंह माली, बृथ अध्यक्ष दिनेश माली, मुकेश माली, जितेंद्र माली, मुकेश कुशावाहा, डूंगर सिंह, रविशार गुर्जर, एडवोकेट धीर देव पाराशर, पींडत अशोक शर्मा, श्रीकांत गोपाल शर्मा एडवोकेट आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

**मजदूरों की घर वापसी शुरू**

भरतपुर, (निस)। एनसीआर क्षेत्र में संचालित ईट-भट्टों पर इस साल मात्र 122 दिन काम चला और बंद हो गया और 60 प्रतिशत से अधिक ईट-भट्टों से श्रमिकों की घर को वापसी हो गई, शेष ईट-भट्टों से भी धीरे-धीरे श्रमिकों का जाना जारी है। ये श्रमिक अपने परिवार सहित देश के कई राज्यों से दशहरा से दीपावली पर्व के आसपास आते हैं और गुरु पूर्णिमा से रक्षाबन्धन पूर्व तक अपने घरों को लौट जाते हैं। जब ये गांव व घर से आते हैं और 7 से 8 माह के बाद लौटते हैं, तो पौधों के चेहरे पर खुशियां नजर आती हैं, जिन्हे ईट-भट्टा मालिक, मुनीम व अन्य कर्मचारी श्रमिकों के द्वारा किए गए कार्य का हिसाब कर मिष्ठान व वस्त्र देकर निजी वाहनों में सवार कर रवाना करते हैं। अधिकांश श्रमिकों के मुख से एक ही वाक्या सुनने को मिलता है कि आ अब लौट चलो ये भले ही एक फिल्म का नाम है, ईट-भट्टों से लौट रहे श्रमिकों के दृश्य पर सटीक साबित हो

रहा है। भरतपुर जिले के उपखण्ड वैर, नदबई, भुसावर, नगर तथा पड़ौसी जिले अलवर के उपखण्ड कदमूर, लक्ष्मणागढ़ एवं दौसा जिले के उपखण्ड महवा, मण्डावर, करोली जिले के उपखण्ड टोडाभीम में करीब 300 से अधिक ईट-भट्टे संचालित हैं। भरतपुर जिले में कस्बा हलेना, नदबई, गांव बेरी, रामनगर, नसवारा, हन्तरा, सरसैना, ईरनिया, अरोदा, बुडवारी, भदीरा, नामखेड़ा, करोली, ऊंच, कबई, रैनिजा आदि गांवों पर 125 से अधिक ईट-भट्टे हैं। ईट भट्टा संचालक चंचल जिनदल व सतीषा जिनदल ने बताया कि भरतपुर जिला एनसीआर क्षेत्र में आता है। जिले के वैर, नदबई, भुसावर व नगर उपखण्ड क्षेत्र में ही ये भट्टे संचालित हैं। जहां ये भट्टे लगे हुए हैं, वहां से दिल्ली की दूरी करीब 250 किमी है और तालमहल की दूरी करीब 75 किमी है। दिल्ली से दौसा, अजमेर, मथुरा की दूरी करीब 120 किमी से 200 किमी होगी।

**नकदी व जेवरत ले गये चोर**

धौलपुर। धौलपुर शहर के कोतवाली थाना क्षेत्र में पेच वाले हनुमान जी मंदिर के टीक पीछे चोर ने चोरी की चारदात को अंजाम दिया है। चोर ने एक सरिरे के जरिए मकान के पांच तालों को तोड़कर 12 हजार रूपए की नगदी के साथ करीब ढाई लाख रूपए के गहनों को पार किया है। घर वालों के आने की आहट सुनते ही चोर पीछे के गेट से भाग निकला। घटना को लेकर पीडित मकान मालिक वरिंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि उनका परिवार घर की एक महिला का जन्मदिन मनाने के लिए रेस्टोरेंट पर गया हुआ था। रेस्टोरेंट पर जाने के बाद एक चोर ने उनके घर में घुसने के लिए एक के बाद एक पांच ताले तोड़ दिए। जिसके बाद चोर घर के अलावा-अलग कमरों में रखे करीब 12 हजार रूपए की नगदी के साथ ढाई लाख रूपए के सोने और चांदी के आभूषणों को चुरा ले गया। जिसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी गई।

**पार्क में किया वृक्षारोपण**

भरतपुर (निस)। एसटीसी हाउसिंग बोर्ड के एस ब्लॉक पार्क में रविवार को एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत यहां के निवासियों ने परिवार सहित विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे गये। वृक्षारोपण अभियान के तहत पार्क में हरसिंगार, गुडहल, चम्पा, गुलदावदी, सहजना, गुलमोहर, बोटल ब्रश सहित विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाये। इनमें कृष्ण कुमार शर्मा एवं उनकी पत्नी शशिप्रभा शर्मा ने चम्पा एवं बोटल ब्रश के पौधे लगाये। इसी प्रकार मुरारी लाल, उनकी पत्नी मंजू सैनी व पौत्र राजदीप सैनी ने हरसिंगार, सहजना, गुडहल के पौधे, पिंकी भारद्वाज एवं पुत्री फाल्गुनी भारद्वाज ने पारस पीपल, गुडहल, अमलाताश एवं कनेर के पौधे रोपे। वहीं गौरव शर्मा ने हरसिंगार व गुलमोहर, वृजेश चौहान ने पारस पीपल, चम्पा, ओमेन्द्र सिंह ने गुलमोहर, सहजना के पौधे लगाये एवं सभी ने पर्यावरण संरक्षण के लिये पौधों



एसटीसी हाउसिंग बोर्ड के एस ब्लॉक पार्क में रविवार को एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधे लगाए।

की नियमित देखभाल की जिम्मेदारी भी ली। इस अवसर पर बताया गया कि हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अधिक से अधिक पेड़ लगाये तभी हमारी भावी पीढ़ियां सुरक्षित एवं संरक्षित रह सकेंगी।

**बजरी से भरे ट्रौला की टक्कर से बाइक सवार घायल**

गंगापुर सिटी। बजरी से भरे ट्रौला की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौके पर मौत हो गई। वहीं, उसकी भाभी गंभीर घायल हो गईं। मुआवजे की मांग को लेकर परिवार अस्पताल के बाहर घरने पर बैठ गए। पुलिस ने समझावश कर धरना समाप्त कराया। पोस्टमार्टम के बाद शव परीक्षण को सौंप दिया गया। आरोपी ट्रौला ड्राइवर को पुलिस ने डिटैन कर लिया। हादसा गंगापुर सिटी के सदर थाना क्षेत्र के बड़ी उदेई के पास रविवार दोपहर को हुआ। बड़ी उदेई गांव निवासी ईश्वर सिंह राजपुत्र पुत्र चुन्नी लाल सुबह साढ़े 11 बजे अपनी भाभी रीना को बाइक से गंगापुर सिटी के जिला

अस्पताल में दिखाने के लिए जा रहा था। इस दौरान गंगापुर सिटी की ओर से नादौती की ओर जा रहे बजरी से भरा ट्रौला ने बड़ी उदेई के पास अली की कोठी के समीप ईश्वर सिंह की बाइक को टक्कर मार दी। जिससे ईश्वर सिंह राजपुत्र की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। उसकी भाभी घायल हो गईं। इस दौरान मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। हादसे के बाद ट्रौला ड्राइवर मौके से फरार हो गया। ग्रामीणों ने शहर चौकी को सूचना दी। जिस पर पुलिस ने नाकाबंदी कर ट्रौला को शहर चौकी के पास पकड़ लिया। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंचे एम्बुलेंस 1-8 घायलों की

जिला अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टर ने ईश्वर को मृत घोषित कर दिया। जबकि भाभी रीना को जिला अस्पताल के सजिकल वार्ड में भर्ती कराया गया है। जहां उसका उपचार चल रहा है। घटना से आक्रेशित ग्रामीणों व परिवजनों ने जिला अस्पताल के बाहर विरोध प्रदर्शन किया और घरने पर बैठ गए। ग्रामीणों ने मृतक के परिवजनों को मुआवजा देने की मांग की। सूचना पर सदर थाना व कोतवाली थाना पुलिस, भाजपा जिलाध्यक्ष सुशील दीक्षित, युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष सहित अन्य अधिकारी अस्पताल में पहुंचे और समझाइश की।

**बलात्कार का आरोपी गिरफ्तार**

करोली, (निस)। करोली महिला थाना पुलिस ने एक नाबालिग बालिका के अपहरण एवं बलात्कार करने के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। महिला थाना अधिकारी मंजू फौजदार ने बताया कि करोली सदर थाना क्षेत्र निवासी एक महिला ने 19 जून को अपनी पुत्री को बहला फुसला कर ले जाने व बलात्कार करने के संबंध में एक रिपोर्ट पेश की थी। प्रकरण महिला अत्याचार संबंधी होने पर तुरंत कार्यवाही करते हुए मामला पोक्सो एक्ट में दर्ज कर फरार आरोपी की तलाश हेतु थाने के सब उपनिरीक्षक रामनिवास के नेतृत्व में टीम गठित की गई। गठित टीम के द्वारा आरोपी के मकान एवं संभावित ठिकानों पर लगातार दृक्शिक्ष दी जा रही थी।

**शिक्षकों की समस्याओं पर विस्तार से चर्चा**

नदबई (निस)। राजस्थान शिक्षक संघ सियाराम उप शाखा नदबई की कार्यकारिणी की बैठक जयपुर रोड स्थित लड्डू हनुमान जी मंदिर पर ब्लॉक अध्यक्ष राजेंद्र सिंह जिलेदार की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक के मुख्य अतिथि प्रदेश संगठन मंत्री यादव चंद लवानियाँ और जिला मंत्री अशोक कुमार लवानियाँ रहे। बैठक में शिक्षकों की समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रदेश संगठन मंत्री यादव चंद लवानियाँ ने बताया कि सभी संवर्गों की डीपीसी करना, पारदर्शी स्थानांतरण करना, ठामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों को 10: अतिरिक्त मानदेय, बीएलओ

को गैर शैक्षणिक कार्य से मुक्त रखना, सभी संवर्गों को चार एसीपी लाभदेय 7,14,21,28 वर्ष पूर्ण करने पर, शिक्षकों की ऑनलाइन निर्भरता को देखते हुए कक्षा कक्ष से बाहर आवश्यकता पड़ने पर फोन की अनुमति प्रदान करने, पीईईओ, यूसीईईआ को 10 प्रतिशत अतिरिक्त मानदेय, शिक्षकों के समस्त पदों को भरने सहित विभिन्न मुद्दों की मांग रखी गई। इसके साथ ही संगठन की सदस्य बढाने पर जोर दिया गया। इस मौके पर ब्लॉक मंत्री अंकुर जिनदल, कोषाध्यक्ष कपिल लवानियाँ, रामविशय फौजदार, हनुमान गुर्जर, ललितेश लवानियाँ, रामजीलाल सहित पदाधिकारी मौजूद थे।

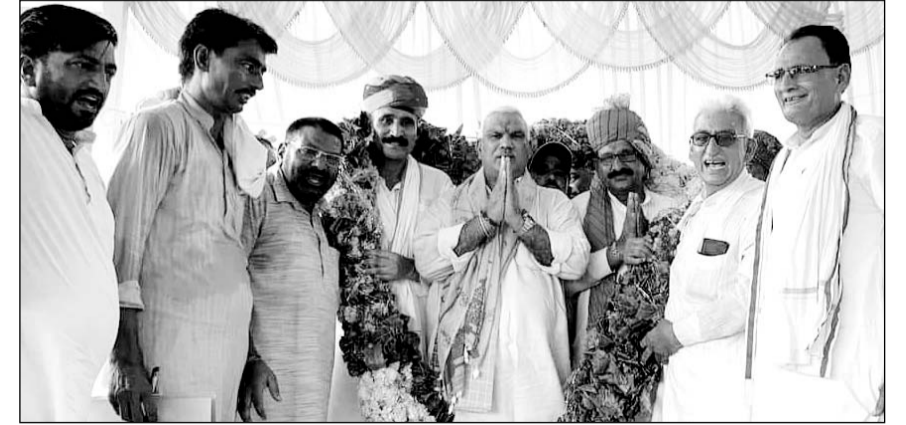
**स्कूल बसों की जाँच कर चालकों को किया पाबंद**

करोली (नि.स.)। करोली जिले में ओवरलोडिंग के कारण होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने और स्कूल बस में क्षमता से अधिक विद्यार्थियों को बिठाने को लेकर पुलिस प्रशासन सक्रिय हुआ है। सपोटरा थाना पुलिस ने उपजिला कलेक्टर कार्यालय के सामने नाकाबंदी कर करीब 18 से अधिक स्कूल बसों की जांच की। जांच कर बस ड्राइवर,कंडक्टर और स्कूल संचालकों से समझाइश की। साथ ही स्कूल बस में क्षमता से अधिक विद्यार्थियों को नहीं बिठाने की हिदायत दी। सपोटरा थाना अधिकारी अनिल कुमार गौतम ने बताया कि वाहनों में क्षमता से अधिक सवारी के बैठने के कारण दुर्घटनाएं होती हैं। दुर्घटनाओं में प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग अपनी जान गंवाते हैं। ऐसे में आमजन को जागरूक करने और सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मौतों को रोकने के लिए पुलिस की ओर से अभियान चलाया जा रहा है। अभियान का उद्देश्य आमजन को जागरूक करना और ओवरलोडिंग के कारण होने वाली दुर्घटनाओं को रोकना है। अभियान के दौरान सपोटरा उपजिला कलेक्टर कार्यालय के सामने स्कूल बसों कि जांच कर उनमें बैठे छात्र-छात्राओं की संख्या की गिनती की। गिनती के साथ छात्र-छात्रा की क्षमता से अधिक छात्र-छात्राओं के बैठे मिलने पर बस चालक-परिचालक,विद्यालय संचालकों को क्षमता से अधिक विद्यार्थी नहीं बिठाने कि हिदायत दी है।

**सनातन संस्कृति ही विश्व में सबसे श्रेष्ठ : गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह**

**मंत्री जवाहर सिंह बेहम ने देश व राज्य की खुशहाली की कामना की**

गंगापुर सिटी । गृह, गौपालन, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य विभाग के मा. राज्यमंत्री श्री जवाहर सिंह बेहम रविवार को श्री जगदीश धाम मन्दिर ट्रस्ट में आयोजित लक्ष्मी मेले में भाग लेने नादौती के कैमरी आए। इस दौरान उन्होंने भगवान श्री जगदीश के दर्शन कर आरती की और प्रदेश में खुशहाली और समृद्धि की कामना की। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पुजारी मनोज कुमार शास्त्री एवं श्रीजगदीश मंदिर विकास समिति के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं आमजन द्वारा राज्यमंत्री का भव्य स्वागत किया गया। गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेहम ने कहा कि सनातन संस्कृति ही विश्व में सबसे श्रेष्ठ है और इस संस्कृति के संरक्षण के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार संस्कृति है। उन्होंने बताया कि हमारा सांस्कृतिक, सनातनी, वैदिक इतिहास संस्कृतिक, सनातनी, वैदिक इतिहास संस्कृतिक पर रहा है। वेदों, शास्त्रों, पुराणों और सनातन संस्कृति एवं संस्कृति में इतनी शक्ति है कि भारतीय संस्कृति अनंत काल तक कभी नष्ट नहीं हो सकती। इस दौरान गृह राज्यमंत्री ने श्री जगदीश धाम मन्दिर



गंगापुर सिटी के कैमरी गांव में राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेहम का स्वागत सम्मान किया।

दुर्घट को पच्चीस पंखे भेंट करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यहाँ इस प्रांगण में आधे घंटे से मैं भी बैठा हूँ, हमारे बड़े-बुजुर्ग, माता-बहने और भाई सभी बैठे हैं, इसमें पंखों की विशेष आवश्यकता महसूस हो रही है और मैं पच्चीस पंखे भगवान जगदीश जी के चरणों में भेंट करने की घोषणा करता हूँ जिससे भविष्य में कोई भी कार्यक्रम हो तो सभी

हवा में बैठकर कार्यक्रम का आनंद प्राप्त कर सके। साथ ही कैमरी में पुलिस चौकी स्थापित कराने का भी उन्होंने आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि देवनारायण छात्रावास के लिए जो आपने कहा है उसके लिए कल ही जाकर के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के केबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत से बात कर प्रयास

करेंगे कि यहाँ भी देवनारायण छात्रावास स्थापित हो सके। इस अवसर पर प्रधान श्रीमती गरमा गुर्जर, सरपंच श्रीमती कर्मलेश खटाना, श्रीजगदीश मंदिर विकास समिति के अध्यक्ष घनश्याम खटाना, सचिव रामविलास खटाना सहित अन्य पदाधिकारी, जन्मनिधि, गणमान्य नागरिक एवं ग्रामवासी उपस्थित रहे।

**सार-समाचार**

**मार्शल आर्ट्स की शाखा शुरू**

भरतपुर (निस)। काली की बगोचो स्थिति ईगन वॉरियर्स मार्शल आर्ट्स अकादमी की द्वितीय शाखा का शुभारंभ सांता किडज स्कूल रंजीत नगर में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि जिला खेलो इंडिया संयोजक 'यश अठावला' एवं विशिष्ठ अतिथि एडवोकेट श्रीनाथा, सुबेदार बच्चू सिंह, विद्यालय संचालक चंदेश, जिला हफकिडो संघ अध्यक्ष सुरेन्द्र फौजदार मोरोली, अकादमी संचालक शिवम कुमार, अकादमी सदस्य सुरजभान, खिलाडी कोमल, विनय, दयाराम, खुशी, आरूषि आदि अभिभावकगण मौजूद रहे।

**विधायक को ज्ञापन दिया**

भरतपुर (निस)। संयुक्त संघर्ष समिति द्वारा जलदाय विभाग के तकनीकी कर्मचारियों को राज एस.एस.ओ. ऐप पर मोबाइल द्वारा ऑनलाइन उपस्थिति से मुक्त कराने हेतु मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार एवं मंत्री वन स्वाभि विभाग राज सरकार के नाम भरतपुर क्षेत्र के विधायकों बहादुर सिंह कोली विधायक वैर एवं डॉ. शैलेश सिंह विधायक डीग-कुम्हेर को मुकेश कुमार पाठक अध्यक्ष के नेतृत्व में ज्ञापन दिया गया। दोनों विधायकों ने संघर्ष समिति की मांग राज0 सरकार तहक पहुंचाने का आश्वासन दिया एवं सरकार द्वारा सकारात्मक कार्यवाही हेतु भरोसा दिलाया। ज्ञापन के समय संघर्ष समिति के प्रकाशचंद शर्मा, दीनदयाल वर्मा, शिवदयाल शर्मा, हुकम सिंह, हरओम सिंह, अनिल कुमार, दुर्ग सिंह, बच्चू सिंह, रामसिंह सैनी, बानवारी लाल शर्मा, शीराम सैनी, पुरूषोत्तम शर्मा, मुकेश सैन आदि उपस्थित रहे।

**जांच शिविर 9 को**

भरतपुर (निस)। वाकर्स क्लब किला भरतपुर द्वारा निशुल्क फिजियोथेरेपी चिकित्सा एवं जांच शिविर 9 जुलाई मंगलवार को कोतवाली के पास डॉ. एच.एन. शर्मा कैम्पस में आयोजित किया जावेगा। संस्था अध्यक्ष प्रकाश मोहन गुप्ता ने बताया कि इस शिविर में नर्वोस्कोप मशीन से रीढ़ की हड्डियों में दर्बी हुई नसों को जांच निशुल्क की जावेगी। इस मौके पर कमर दर्द, घुटने का दर्द, लकवा, हाथ पैरों का काम न करना, मांसपेशियों में खिंचवा आना, फ्रेक्चर या जोड़ प्रत्यारोपण के बाद जोड़ों का या मशल का जाम होना, कंधे का जाम होना, जन्मजात बच्चों को चलने में या खड़े होने में परेशानी होना आदि रोगों का निशुल्क जांच एवं उपचार फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. बी.एन. शर्मा एवं उनकी टीम द्वारा किया जावेगा।

**भरतपुर स्थापना दिवस सोमवार को**

भरतपुर (निस)। श्री मित्र भारत समाज संस्थान, भरतपुर का स्थापना दिवस समावेश 8 जुलाई सोमवार को दोपहर 12 बजे से वनस्थल फार्म हाउस, त्योंगा भरतपुर में आयोजित होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जवाहरसिंह बेहम गृह राज्य मंत्री होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राहुल प्रकाश पुलिस महानिरीक्षक भरतपुर रैंज करेंगे। कार्यक्रम संयोजक श्यामसिंह जघोना के अनुसार यह कार्यक्रम स्वामी हरि चैतन्यपुरी महाशय के सानिध्य में होगा। इसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी भारत सिंह विरहरू, समाजसेवी यश अठावला, पूर्व प्रधान निहाल सिंह, राष्ट्रीय संरक्षिका लक्ष्मी गुप्ता जयपुर, पूर्व जिला सत्र न्यायाधीश भगवानदास गुप्ता आदि होंगे। इसमें उत्कृष्ट कार्य करने वाले समाजसेवीयों का सम्मान किया जावेगा व गरीब परिवार की महिलाओं को साडी वितरित की जायेगी।

**जगन्नाथ जी की रथयात्रा निकली**

भरतपुर (निस)। शहर में निकली भगवान श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा मंदिर श्री बंके बिहारी जी से एवं मंदिर मदनमोहन टांडा की निकली जिसका भव्य स्वागत सत्कार किया गया। सह संयोजक मोहन मित्तल ने बताया कि बड़ा बाजार में भगवान श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा का स्वागत भरतपुर जिला अठावला महासभा एवं महाराजा श्री अठारसेन शोभायात्रा समिति के संयुक्त तत्वावधान में ठाकुर जी को पुष्पवर्षा, पटका अर्पण कर, मिष्ठान भोग लगाया गया एवं रथयात्रा में चल रहे बन्धुओं को शरवत पिलाया गया एवं पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इस मौके पर भरतपुर जिला कल्याण महासभा अध्यक्ष सीए अतुल मित्तल, शोभायात्रा समिति संयोजक सुरेश बंसल, सह संयोजक मोहन मित्तल, विष्णु लोहिया, महेश गोयल सराफ, विनोद मेडीकल, सतीश मित्तल, शुभम मित्तल, महेशचंद्र सिंघल आदि मौजूद रहे।

**कार्यालय में किया पौधा रोपण**

करोली । करोली में बरखेडा स्थित विद्युत निगम के वृत्त कार्यालय परिसर में विद्युत निगम करोली के अधीक्षण अभियंता जे.एल.मीना ने अशोक का पौधा लगा कर पौधारोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। वृत्त कार्यालय परिसर में विभिन्न किस्मों के छाया दार व फूलदार पौधे लगाए। इस अवसर पर विद्युत निगम करोली के अधिशाषी अभियंता डी. डी. मीना, अधिशाषी अभियंता सतिका गोविंद सिंह, प्रशासनिक अधिकारी अरविन्द अठावला,सहायक प्रशासनिक अधिकारी महेश मीना,योगेश अठावला,पंकज गुप्ता,शैलेन्द्र मुद्गल,केलाशा मीना सहित अन्य स्टाफ उपस्थित रहा।

**स्वर्ण प्राशन ड्रॉप पिलाई जावेगी**

करोली (नि.स.)। चिकित्सालय के प्रधान डॉ. नरेश कुमार शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि आज सोमवार को जिला चिकित्सालय फूटकोट पर निशुल्क स्वर्ण प्राशन ड्रॉप पिलाई जावेगी। उन्होंने बताया कि स्वर्ण प्राशन ड्रॉप पुष्प पेसत्र के दिन पिलाई जाती है आर्यवेद के अनुसार इस ड्रॉप के सेवन से बालकों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है और बुद्धिता का विकास होता है। वर्तमान की मौसमी बीमारियों ऋतु परिवर्तन जनित व्याधियों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होकर बीमारियों से बचाव होता है। उन्होंने अधिभावकों से अपील की है कि ड्रॉप पिलाने लाते समय बालक का जन्म प्रमाण पत्र की छाया प्रति साथ लावे और ड्रॉप पिलाने का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करें।

**वृक्षारोपण किया**

भरतपुर (निस)। राजस्थान शिक्षक संघ (सियाराम) की ओर से रविवार को हरित पखवाडा के अन्तर्गत राजकीय मास्टर आदित्येन्द्र उच्च माध्यमिक विद्यालय के बाहर वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर पर्यावरण के संरक्षण के लिये प्रत्येक को एक पेड़ लगाने व सिंगल यूज प्लास्टिक बंद करने को सलाह दी गई। इस मौके पर अशोक पाराशर, श्याम सिंह, अनिल भारद्वाज, पवनजी, प्रदेश महामंत्री होलीलाल जैमन व जिलाध्यक्ष केशवदेव शर्मा तथा रोहित चौधरी आदि उपस्थित थे।

**रथ यात्रा का स्वागत**

भरतपुर (निस)। श्री ब्राह्मण सभा महिला प्रकोष्ठ भरतपुर द्वारा बिहारी जी रथ यात्रा का राम वाटिका पर स्वागत किया गया। जिसमें को जिला अध्यक्ष संगीता शर्मा द्वारा बिहारी जी को माल्यार्पण कर आरती उतारी गई एवं उपाध्यक्ष नीतू शर्मा एवं वंश शर्मा द्वारा सभी पद यात्रियों का पटका पहनकर स्वागत किया गया। पद यात्रियों को शीतल पेयजल भी वितरित किया गया। मिथिलेश, अदिति, जूही, जाह्नवी आदि महिलाएं उपस्थिति रही।

**तीन दिवसीय प्रशिक्षण आज से**

करोली (नि.स.)। अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट राजवीर सिंह चौधरी ने बताया कि करोली जिले में 8 से 10 जुलाई तक सरकारी विद्यालयों,महाविद्यालयों में तीन दिवसीय वायु सेना भर्ती में चयन प्रक्रिया के संबंध में प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस संबंध में उन्होंने पुलिस अधीक्षक,समस्त उपखंड अधिकारी,जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक व प्राथमिक,प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए हैं।

**शर्बत वितरण किया**

भरतपुर (निस)। भौमिक चैरिटेबल सोसायटी द्वारा रविवार को जगन्नाथ यात्रा के उपलक्ष्य में बिहारी जी मंदिर किला में शर्बत वितरण का पुनीत कार्य किया गया। इस अवसर कि विजय दीक्षित, अमित गुप्ता, अनिल बंसल, राजेश कासिनवार, भौमिक सिंह रहे। कार्यक्रम के अन्त में सोसायटी सचिव गिरीश कासिनवार ने सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

**एबीवीपी की बैठक सम्पन्न**

करोली (नि.स.)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जिला करोली को बैठक शनिवार को जिला कार्यालय पर आयोजित हुई। जिला संयोजक योगेन्द्र डायर शेरपुर ने बताया कि जिला बैठक में प्रवास पर डॉ. धर्मवीर सिंह एवं विभागीय संगठन मंत्री अनिरुद्र का प्रवास रहा जिसमें आगामी कार्यक्रम 9 जुलाई विद्यार्थी परिषद स्थापना दिवस कार्यक्रम,नगर कार्यकारिणी गठन,सदस्यता अधिवेशन,तिरंगा अभियान, आदि कार्यक्रमों को लेकर बैठक हुई।

# तारानगर में साढ़े पांच इंच बरसात होने से निचले इलाकों में पानी भरा

कई जगह पर 6 से 10 फीट पानी भरने से रास्ते बन्द हुये, सरकारी स्कूल में भी पानी भर गया

तारानगर, (निस)। तारानगर में शनिवार की रात्रि को हुई 141 एमएम (साढ़े पांच इंच) मूसलाधार बरसात से बस स्टैंड, बिसायती मोहल्ला, ख्याली मोहल्ला, खालियों का मोहल्ला सहित कई निचले इलाकों में पानी भरने से आम जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। रविवार देर शाम तक तारानगर की सड़कों पर पानी भरा हुआ था आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था।

सगतानी मोहल्ला, अम्बेडकर मूर्ति से नये बस स्टैंड तक 6 से 10 फीट पानी भरने से रास्ता बन्द हो गया। वहीं राजकीय सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल में भी पानी भर गया। मुख्य रास्ते बन्द हो गये। वहीं मोबाइल मार्केट सहित पुराने बस स्टैंड व नये बस स्टैंड स्थित दुकानों के अन्दर पानी भर गया, जिसके कारण दुकानों में रखा सामान खराब हो गया, पूरे दिन दुकानें बन्द रही। बताया जा रहा है कि बारिश का पानी दुकानों में भरने से करोड़ों रुपये का व्यापारिक रूप से तारानगर के बाजार पर असर हुआ है।

मुख्य सड़क पर पानी भरने के कारण आमजन का बस स्टैंड से आना जाना बन्द हो गया तो वहीं खालियों के मोहल्ला स्थित बाल मन्दिर के पास भी बरसाती पानी भरने से हालात बदतर हो गये। नगर पालिका प्रशासन प्रयासों के नाम पर कुछ पम्प पानी निकासी के लिये चलाये लेकिन वो उंट के मूँह में ज़ीरा ही सबीत रहे हैं। ईओ अजय प्रताप सिंह, नगर पालिका तारानगर का कहना है कि तारानगर में बस स्टैंड ड्रव क्षेत्र है, पम्प चला दिये गये हैं।



तारानगर में मूसलाधार बरसात होने से बाजारों में पानी भर गया।

## बारिश का पानी दुकानों में भरने से व्यापारियों को परेशानी का सामना करना पड़ा

2-3 घण्टे में पानी निकासी कर दिया जायेगा। ड्रेनेज सिस्टम के लिये केन्द्र सरकार द्वारा अमृत योजना के अन्तर्गत 20 करोड़ की डीपीआर तैयार करवाई गई है। डीपीआर स्वीकृति मिलते ही बरसाती पानी निकासी के लिये कार्य प्रारम्भ हो जायेगा।

## मकान की छत गिरी, दो भाईयों की मौत

हनुमानगढ़, (निस)। बारिश के कारण दो सगे भाई की मौत हो गई। इधर, टिब्बी क्षेत्र में आई तेज बारिश से सूरेवाला गांव में सड़क पर कटाव आ गया। ऐसे में सड़क पर खड़ा ट्रक पलट गया। हालांकि, गनमीत रही कि हादसे के वक्त ट्रक में कोई नहीं था। जानकारी के मुताबिक हनुमानगढ़ जिले के टिब्बी क्षेत्र में रविवार अल सुबह हुई तेज बरसात के चलते खेत में बने एक कमरे की छत गिरने से

बिहार मूल के दो सगे भाईयों की मौत हो गई, जबकि तीन अन्य घायल हो गए। सभी यहाँ पर खेतीहर मजदूर के तौर पर काम करने के लिए आए हुए थे। घटना की सूचना मिलने पर टिब्बी तहसीलदार चंदन पवार थाना अधिकारी जगदीश पांडर व अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे तथा घायलों को इलाज के लिए चिकित्सालय पहुंचाया। जानकारों के अनुसार चक दो जीजीआर रोही राठीखेड़ा में एक

खेत पर बने कमरे में बिहार मूल के खेतीहर मजदूर रात को सो रहे थे। रविवार अल सुबह तेज बरसात के चलते कमरे की छत गिर गई जिसके चलते अमित कुमार पुत्र रामभरोसे व उसका भाई सुमित कुमार पुत्र रामभरोसे की मौत हो गई जबकि राम भरोसे, अभिषेक साहनी व भारत साहनी घायल हो गए। जिन्हें बाद में टिब्बी व हनुमानगढ़ चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है।

# अनियंत्रित कार खड़े ट्रक में घुसी, पिता सहित बेटी की मौत

मृतक की पत्नी के अलावा सात घायल, अजमेर रेफर



दुर्घटना इतनी भीषण थी कि कार के आगे का हिस्सा चकनाचूर होकर कबाड़ में तब्दील हो गया।

मदनगंज-किशनगढ़/अजमेर, (निस)। बंदरसिंदरी थाना अंतर्गत जयपुर हाइवे मार्ग स्थित गांव पाटन की सरहद पर रविवार को एक कार अनियंत्रित होकर हाइवे किनारे खड़े ट्रक में जा चुसी। घटित सड़क दुर्घटना में पिता सहित डेढ़ वर्षीय बेटी की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई। साथ ही मृतक की पत्नी के अलावा सात जने घायल हो गए। हादसे के बाद घायलों को हाइवे एम्बुलेंस से राजकीय यज्ञनारायण जिला चिकित्सालय पहुंचाया गया। सभी घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद अजमेर रेफर कर दिया। दुर्घटना इतनी भीषण थी कि कार के आगे का हिस्सा चकनाचूर होकर कबाड़ में तब्दील हो गया। काफी मशकत के बाद इनको बाहर निकालकर स्थानीय राजकीय अस्पताल पहुंचाया।

## दो भाईयों का परिवार खादूरग्रामजी के दर्शन कर कार से अजमेर लौट रहा था

थाना ईचांचां पारुल यादव ने बताया कि अजमेर में रहने वाले दो भाईयों का परिवार खादूरग्रामजी के दर्शन कर कार से वापस घर लौट रहा था। इसी दौरान सुबह करीब सात बजे कार अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे खड़े ट्रक में जा चुसी, जिससे माकड़वाली यूआईटी कोलोनो अजमेर निवासी रवि गुरानी (35) पुत्र किशनचंद सिंघी, डेढ़ वर्षीय बेटी प्राक्षी की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जबकि मृतक रवि गुरानी की पत्नी पूनम (34), बड़ी बेटी साक्षी

(9), मां पुष्पा (58), भाई पहाड़गंज अजमेर निवासी मुकेश (38) पुत्र किशनचंद, मुकेश की पत्नी भूमिका (37), बेटी रवीना (14) सहित कार चालक गांव बीर श्रीनगर अजमेर निवासी जितेंद्र रावत (32) पुत्र गोपाल सिंह को जेल एन अस्पताल अजमेर में भर्ती कराया है।

पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर पोस्टमार्टम की कार्यवाई के बाद शव परिवर्तनों को सौंप दिया है। हादसे की सूचना मिलते ही पार्षद सुशील अजमेर, सिंधी समाज प्रमुख समाजसेवी पीशु मुलानी, गिरधारी अम्बरवाणी, कुमार मुलानी, अशोक शोभानी, महेश साधवानी, जितेंद्र कोरानी, करण मेघानी, मुकेश मेघानी ने संवेदना व्यक्त कर पुलिस कार्यवाई में सहयोग किया।

# बहुचर्चित देवीराम मुल्लाका हत्याकांड के तीन और आरोपियों को दबोचा



कामां थाना इलाके में बहुचर्चित रहे देवीराम मुल्लाका हत्याकांड के तीन और आरोपियों को पकड़ा।

जयपुर/डीगा। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय की टीम ने डीग जिले के कामां थाना इलाके में तीन साल पहले बहुचर्चित रहे देवी राम मुल्लाका हत्याकांड के तीन और आरोपियों को पकड़ लिया है। तीनों आरोपियों पर एसपी डीग द्वारा 25-25 हजार रुपए का इनाम घोषित है। तीन साल से फरार चल रहे तेरह आरोपियों में से सात को पिछले 10 दिनों में एंटीडीएफ ने पकड़ कामां पुलिस के सुपुर्द किया है।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स एवं अपराध

दिनेश एमएन ने बताया कि उप महानिरीक्षक पुलिस योगेश यादव के सुपरविजन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एंटीडीएफ विद्याप्रकाश के नेतृत्व में वांछित अपराधियों, गैंगस्टर इत्यादि के बारे में आसूचना के संकलन के लिए एसएसआई शैलेंद्र कुमार शर्मा, हेड कॉन्स्टेबल मदनलाल शर्मा व कॉन्स्टेबल बुजेश कुमार शर्मा की एक टीम भरतपुर रेंज की ओर रवाना की गई। एंटीडीएफ एमएन ने बताया कि शनिवार को टीम को मिली सूचना पर एसपी डीग राजेश मीणा के समन्वय व

एसएचओ कामां मनीष शर्मा मय टीम के सहयोग से 25-25 हजार के इनामी आरोपी बनवारी गुजर पुत्र रामपाल, रामेश्वर गुजर पुत्र चेताराम एवं भगत सिंह गुजर पुत्र नेतराम निवासी मुल्लाका को करम्बा कामां से पकड़ा गया।

एमएन ने बताया कि 11 जून 2021 की सुबह खरीदारी करने बाइक लेकर कामां के लिए निकले देवी राम गुजर निवासी मुल्लाका पर पुरानी रंजिश के चलते गांव के ही रामावतार पुत्र रामप्रसाद पक्ष के 20-22 व्यक्तिवत ने लोहे के सरियों और लाटियों से हमला

## तीन साल फरार 13 आरोपियों में से सात को 10 दिन में पकड़ा, 25-25 हजार के इनामी हैं आरोपी

कर दिया और मरा समझकर हवाई फायर करते हुए गांव आये। गांव में भी फॉयरिंग की जिसमें तीन बच्चे व चार अन्य घायल हो गये। गंभीर घायल देवीलाल ने जयपुर लाते समय महुआ से पहले दम तोड़ दिया था। मामले में थाना पुलिस द्वारा पूर्व में आठ व्यक्तिवतों को गिरफ्तार कर लिया था। घटना के बाद से ही 13 आरोपी फरार चल रहे थे। जिन पर 25-25 हजार का इनाम घोषित किया गया था। मामले में एंटीडीएफ ने 26 जून को पलवल से आरोपी राम अवतार गुजर एवं थाना खोह से बबलू गुजर को तथा 4 जुलाई को कैथवाड़ा के पास से बलराज गुजर व रामप्रसाद गुजर को डिटेन किया गया था। मात्र 10 दिनों के अंदर एंटीडीएफ ने घटना में फरार सात आरोपियों को पकड़ लिया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एंटीडीएफ विद्या प्रकाश के नेतृत्व में की गई इस संपूर्ण कार्यवाई में एसएसआई शैलेंद्र शर्मा, हेड कॉन्स्टेबल मदन लाल शर्मा एवं कॉन्स्टेबल बुजेश कुमार की विशेष भूमिका रही। कार्यवाई में एसएचओ कामां मनीष शर्मा मय टीम का सराहनीय सहयोग रहा।

## पेड़ से लटका मिला शव

सीकर, (निस)। बावड़ी के एनएच 52 पर युवक का शव पेड़ से लटका मिला है। युवक के तौलिये से फंदा लगा हुआ था और शव से बदन आ रही थी। स्थानीय लोगों ने इसकी जानकारी पुलिस को दी। शव करीब 2 से 3 दिन पुराना बताया जा रहा है। एसआई दीपिका रानी ने बताया कि शनिवार रात को एन एच 52 पर लावारिस स्विफ्ट कार खड़ी होने की सूचना मिली। पुलिस मौके पर पहुंचकर कार को थाने ले आई। इसके बाद स्थानीय लोगों के द्वारा उसी जगह पर पेड़ पर शव लटका होने की सूचना प्राप्त हुई। पुलिस घटना स्थल पर पहुंची। शव को पेड़ से नीचे उतार कर रिंग्स सीपेचसी में रखवाया। पुलिस ने स्विफ्ट कार पर लिखे नंबरों के आधार पर शव को पहचान मृतक चरू के राजलदेसर निवासी राकेश जाट के रूप में की। मृतक के परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार राकेश अविवाहित था और कई दिनों से मानसिक तनाव में था। मृतक युवक किराए पर कार चलाने का काम करता था पुलिस मामले की जांच कर रही है।

# नहाने गए युवक की मचकुंड सरोवर में डूबने से मौत

धौलपुर, (निस)। धौलपुर शहर के तीर्थराज मचकुंड सरोवर में रविवार दोपहर नहाने गया एक युवक पर फिसलने से डूब गया। युवक को सरोवर में डूबा देख मौके पर मौजूद मचकुंड चौकी ईचांचां कृष्ण अवतार वर्दी पहने ही सरोवर में कूद गए, जिसके बाद सरोवर में डूबे युवक को बाहर निकाल कर जिला अस्पताल धौलपुर ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मचकुंड चौकी प्रभारी कृष्ण अवतार ने बताया कि रविवार दोपहर को वह चौकी पर ड्यूटी कर रहे थे। इसी दौरान उन्हें एक युवक मचकुंड सरोवर में डूबा हुआ दिखाई दिया, जिसे देखकर उन्होंने तीर्थराज मचकुंड में छांटांग लगा दी। चौकी प्रभारी के साथ कॉन्स्टेबल योगेंद्र और 112 गाड़ी के ड्राइवर धर्मेश भी सरोवर में कूद गए। युवक को सरोवर से बाहर निकालकर जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक की पहचान 19 वर्षीय अमित पुत्र राजेश निवासी भामतीपुरा के रूप में हुई है। चौकी प्रभारी ने बताया कि मृतक युवक अपने दो साथियों के साथ सरोवर में नहाने गया था, जहां अचानक पैर फिसल जाने से युवक गहरे पानी में चला गया। उन्होंने बताया कि मृतक के परिजनों द्वारा तहरीर दिए जाने के बाद शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

# मोटा मुनाफा के लालच में युवक से एक करोड़ की ठगी

अजमेर, (कास)। एक ओर जहां साइबर पुलिस ऑनलाइन ठगी की वारदातों पर अंकुश लगाने का प्रशिक्षण ले रही है तो वहीं दूसरी तरफ शांतिर ठग टेक्नोलॉजी का फायदा उठाकर पुलिस को चुनौती दे रहे हैं। ऐसा ही एक मामला रामगंज थाना क्षेत्र का सामने आया है। शांतिर ठगों ने युवक से थोखाघड़ी कर ब्लॉक ट्रेडिंग व शेयर मार्केट में मोटा मुनाफा कमाने का झांसा देकर करीब एक करोड़ की राशि हड़प ली। युवक ने शांतिर ठगों के कहने पर प्ले स्टोर से एप्लीकेशन डाउनलोड कर ली। पीड़ित युवक ने साइबर थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। साइबर थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार रामगंज थाना क्षेत्र के अजय नगर निवासी एक युवक ने शांतिर ठगों के खिलाफ लिखित शिकायत देते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। दर्ज रिपोर्ट में पीड़ित युवक ने पुलिस को बताया कि जून माह में

## ठगों ने थोखाघड़ी कर ब्लॉक ट्रेडिंग व शेयर मार्केट में मोटा मुनाफा कमाने का झांसा दिया

उसके व्हाट्सएप पर एक अज्ञात नंबर से ए-5 मोटिलाल ओसवाल एडवाइजरी ग्रुप से जोड़ा। ग्रुप में जोड़ने के बाद ब्लॉक ट्रेडिंग व शेयर मार्केट में निवेश कर मोटा मुनाफा कमाने का झांसा दिया गया। इस ग्रुप में करीब 160 लोग जुड़े हुए थे, जिनके द्वारा प्रॉफिट की पोस्ट शेयर की गई थी। पीड़ित ने शिकायत में बताया कि वह शांतिर ठगों की बातों में आ गया। तभी एक अज्ञात नंबर से उसे अलग से मैसेज आया जिसमें उन्होंने प्ले स्टोर से

एप्लीकेशन डाउनलोड करवा कर रजिस्ट्रेशन कराया। बाद में दूसरे व्यक्ति ने अन्य नंबर से मैसेज कर उसे कंपनी का प्रमुख बताया और आश्वासन दिया जिससे वह झांसे में आकर मुनाफा होने के लालच में आकर एप में एक करोड़ से अधिक की राशि ट्रांसफर कर दी। पीड़ित ने बताया कि जब एप को देखा तो देखने पर उसमें दो शेयर दिखते थे। जुलाई 2024 में उसने पेप से रकम अपने खाते में ट्रांसफर करने की कोशिश की तो रकम नहीं निकली। उसने रिलेशनशिप मैनेजर से संपर्क किया तो उसने पैसे निकालने पर 30 प्रतिशत टैक्स व ब्रोकरेज जमा करने के लिए कहा। उसने मोटिलाल ओसवाल के कन्टैक्ट पर केयर पर संपर्क कर तो पता चला कि उनके द्वारा कोई भी ऐसा ग्रुप नहीं बनाया है, तब युवक को अपने थोखाघड़ी का पता चला। पीड़ित युवक की शिकायत पर साइबर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच सब इंस्पेक्टर मनीष चरण को सौंपी है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

# शादी का झांसा देकर युवती से तीन साल तक दुराचार

अजमेर, (कास)। अलवर गेट थाना क्षेत्र में रहने वाली एक युवती से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पीड़िता ने युवक पर शादी का झांसा देकर तीन साल तक दुष्कर्म करने और अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देने का आरोप लगाए हैं। पीड़िता ने एसपी देवेन्द्र बिस्नोई से न्याय की गुहार लगाई है। एसपी के दिशा निर्देशों पर अलवर गेट थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अलवर गेट थाने के एसएसआई शंकर लाल खंची ने बताया कि थाना क्षेत्र में रहने वाली एक युवती ने एसपी देवेन्द्र बिस्नोई को ज्ञापन सौंपकर न्याय की गुहार लगाते हुए आरोपी युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की शिकायत दी है। एसपी के आदेश पर पुलिस मुकदमा दर्ज कर लिया। पीड़ित युवती ने आरोप लगाया कि पड़ोस में रहने वाली महिला ने एक युवक से उसकी जान-पहचान करावाई और आरोपी द्वारा शादी करने का झांसा दिया था। युवक ने झांसा देकर तीन साल

## आरापी ने अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी दी

पीड़िता ने आरोप लगाया कि जब उसने उसके अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी दी। पुलिस पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इस प्रकरण की जांच थाना प्रभारी श्याम सिंह कर रहे हैं।

# शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने राहुल गांधी को लेकर बड़ा बयान दिया

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने राहुल गांधी को विदेशी महिला का बेटा बताया

झुंझुनू, (निस)। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर रविवार को झुंझुनू के दौर पर रहे। झुंझुनू पहुंचने पर उन्होंने शहीद स्मारक पर शहीदों की और बाबा साहेब को नमन किया। इस मौके पर मंत्री मदन दिलावर के साथ भाजपा प्रदेश महामंत्री संतोष अहलावत, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच, भाजपा जिलाध्यक्ष बनवारीलाल सैनी तथा भाजपा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य विश्वम्भर पुनिया भी साथ रहे।

सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत करते हुए मदन दिलावर ने एक विवादस्पद और राहुल गांधी को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि चाणक्य ने सही कहा था कि विदेशी महिला के पेट से पैदा होने वाला व्यक्ति या बेटा कोई भी देश का भला नहीं कर सकता, बल्कि देश के खिलाफ ही कार्यवाई करेगा। चाणक्य की बात सही साबित हो रही है। राहुल गांधी एक विदेशी महिला के पुत्र हैं इसलिए वो लगातार देश के खिलाफ और देशवासियों के खिलाफ कर रहे हैं। उन्होंने पूरे देश के लोगों को हिंसक और झूठा कहा है। यह पूरे हिंदुस्तान और हिंदुओं का अपमान है। दिलावर ने कहा कि पता नहीं



शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने शहीद स्मारक पर शहीदों की ओर बाबा साहेब को नमन किया।

कांग्रेस किसके इशारे पर चल रही है, कौन इन्हें प्रेरणा दे रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। इससे पहले भी राहुल गांधी बोल चुके हैं कि हिंदू मंदिर में लड़कियां छेड़ने जाते हैं। यह भी हमारी हमारी बहनो और भाईयों का अपमान है। राहुल गांधी ने हिंदू समाज का, साधु-संतों का, आने वाली हमारी ज़रूरत का और हमारा घोर अपमान किया है। हिंदुस्तान की जनता

इसे माफ नहीं करेगी। इस मौके पर डॉ. राजेश बाबल, सुराी सैनी, महेश जीनगर, प्यारेलाल दुर्किया, पूर्व प्राध गिरधारीलाल खोचड़, पूर्व पार्षद कुलदीप पुनिया आदि मौजूद थे।

इस मौके पर पत्रकारों के सवालों के जवाब देते हुए मदन दिलावर ने संकेत दिए कि शिक्षकों के तबादले विधानसभा सत्र के बाद होंगे। दरअसल एक सवाल का जवाब देते हुए दिलावर

ने कहा कि तबादले जब भी करेंगे, मीडिया को इसकी जानकारी देंगे। लेकिन फिलहाल तो जैसे भी विधानसभा सत्र चल रहा है, ऐसे में तबादले नहीं हो सकते, जिससे यह संभावना जताई जा रही है कि विधानसभा सत्र के बाद सरकार शिक्षकों के तबादले कर सकती है। तृतीय श्रेणी शिक्षकों के तबादलों को लेकर दिलावर ने कहा कि यह मामला

कमरा बनाया, ना स्टफ लगाया पुराने स्कूलों पर अंग्रेजी माध्यम का बोर्ड लगाने से इंग्लिश मीडियम स्कूलें नहीं हो जाती। यह सिर्फ गत सरकार का षडयंत्र था। निजी स्कूलों की चकालत करते हुए शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि सरकारी स्कूलों में फिलहाल 82 लाख और निजी स्कूलों में 85 लाख बच्चे पढ़ रहे हैं। इसीलिए निजी स्कूलों 5 से 15 हजार रुपए के बीच ले रहे हैं। जिनसे उनका काम चल रहा है, लेकिन 2.7 फीसदी स्कूल ऐसे हैं, जहां पर फीस ज्यादा है, लेकिन उनके अपने तर्क हैं। हम कोशिश कर रहे हैं कि कोई बीच का रास्ता निकाला जाए, जिससे विद्यार्थियों व अभिभावकों पर बोझ ना पड़े और स्कूलों भी चलती रहे।

# खान विभाग ने पहली तिमाही में ही राजस्व अर्जन का नया इतिहास रचा : आनंदी

## ‘माइंस विभाग द्वारा अप्रैल-जून की पहली तिमाही में 13 फीसदी ग्रोथ के साथ 1977.26 करोड़ का राजस्व संग्रहण’

जयपुर, (का.सं.)। राज्य का माइंस विभाग राजस्व अर्जन में इस साल नया रिकार्ड कायम करने जा रहा है। शासन सचिव माइंस एवं पेट्रोलियम आनंदी ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में गत वित्तीय वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 13 प्रतिशत ग्रोथ के साथ राज्य सरकार को 1977 करोड़ 26 लाख रुपए का राजस्व जमा हो गया है। गत वित्तीय वर्ष के पहले त्रैमास में 1746 करोड़ 55 लाख रुपए का राजस्व अर्जित हुआ था। एएसएमई कार्यालयों में जयपुर त्रैमासिक लक्ष्यों की तुलना में 112.37 प्रतिशत लक्ष्य अर्जित कर प्रदर्शने में पहले पायदान पर पहुंच गया है। भीलवाड़ा और भरतपुर एएसएमई कार्यालय दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे हैं।

खान सचिव आनंदी ने बताया कि मुख्यमंत्री व खान मंत्री श्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व व मार्गदर्शन में खान विभाग द्वारा इस वित्तीय वर्ष में राजस्व अर्जन का नया रिकार्ड स्थापित किया जाएगा। सरकारी राजस्व की छीजत

रोकने, राजस्व बढ़ाने के लिए विभागीय मोनेटरिंग व्यवस्था को मजबूत करने और नियमित समीक्षा के परिणाम स्वरूप उल्लेखनीय सफलता मिली है। योजनाबद्ध तरीके से मिनरल ब्लॉकों की ई-नीलामी, अवैध खनन गतिविधियों पर कार्यवाही में तेजी, नियमित मोनेटरिंग, दिशा-निर्देशों के क्रियान्वयन व आपसी समझ व समन्वय से लक्ष्यों से अधिक राजस्व अर्जित किया जा सका है। रिकार्ड राजस्व अर्जन के लिए विभाग के अधिकारियों व कार्मिकों को बढ़ाई देते हुए बताया कि टीम भावना व परस्पर समन्वय से यह रिकार्ड राजस्व संग्रहण हो सका है।

निदेशक माइंस भावती प्रसाद कलाल ने बताया कि वर्ष 2022-23 में पहली तिमाही में 1561 करोड़ 04 लाख रु., 2023-24 में 1746 करोड़ 55 लाख रु. का राजस्व अर्जित किया गया था जो वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में 13 प्रतिशत विकास के साथ बढ़कर 1977 करोड़ 26 लाख रुपए हो गया है। यह पहली तिमाही में राजस्व

अर्जन का नया रिकार्ड भी है। सीमित संसाधनों के बावजूद विभाग द्वारा राजस्व बढ़ोतरी के बेहतरीन परिणाम मिले हैं। निदेशक कलाल ने बताया कि समन्वित व समग्र प्रयासों से खान विभाग द्वारा राजस्व वसूली के प्रयासों में तेजी लाई गई है। विभाग द्वारा अवैध खनन व परिवहन गतिविधियों पर सख्त कार्यवाही की जा रही है जिसके सकारात्मक प्रभाव आने लगे हैं।

अप्रेल से जून तिमाही में एएसएमई जयपुर एनएस शकतावत की टीम ने 203 करोड़ राजस्व वसूली के लक्ष्य के विरुद्ध 228 करोड़ 12 लाख की राजस्व वसूली कर 112.37 प्रतिशत उपलब्धि हासिल की है। एएसएमई जयपुर

कार्यक्षेत्र में एएसएमई टॉक सोहन लाल सुथार ने 133 प्रतिशत, एएसएमई बुध्दुनु रामलाल सिंह ने 124 प्रतिशत, एएसएमई कोटपुतली अमीचंद दुहारिया ने 111, एएसएमई जयपुर श्याम कापड़ी ने 110 प्रतिशत, एएसएमई अलवर पुष्पेन्द्र मीणा ने 108.58 प्रतिशत व एएसएमई दौसा लक्ष्मी चंद मीणा ने लक्ष्यों के विरुद्ध 110 प्रतिशत उपलब्धि हासिल की है। एएसएमई भीलवाड़ा ओपी काबरा के मार्गदर्शन में भीलवाड़ा जेन में 492 करोड़ 53 लाख के लक्ष्यों के विरुद्ध 533 करोड़ 10 लाख की राजस्व वसूली कर लक्ष्यों के विरुद्ध 108 प्रतिशत उपलब्धि अर्जित की है। भीलवाड़ा एएसएमई ओपी काबरा के कार्यक्षेत्र में एएसएमई भीलवाड़ा चंदन कुमार व बिजोलिया एएसएमई सत्यनारायण कुमावत ने लक्ष्यों के विरुद्ध 116 प्रतिशत से अधिक वसूली की है।

इसी तरह से राजस्व वसूली में तीसरे पायदान पर रहे एएसएमई भरतपुर हेरीश चन्द्र गोयल के क्षेत्र में 104.10 प्रतिशत उपलब्धि हासिल की है। इनमें

भरतपुर, करौली और धौलपुर कार्यालयों में लक्ष्यों से अधिक वसूली रही। एएसएमई बीकानेर धर्मेन्द्र लुहार के क्षेत्र में 106 करोड़ 90 लाख की वसूली लक्ष्य के विरुद्ध 108 करोड़ 52 लाख की 101.52 फीसदी राजस्व वसूली रही है। बीकानेर क्षेत्र में एएसएमई श्रीगंगानगर धीरज पवार, एएसएमई महेश प्रकाश पुरोहित और एएसएमई चुर एनएल मेघवाल ने लक्ष्यों के विरुद्ध शतप्रतिशत से अधिक वसूली की है। राशि की दृष्टि से सर्वाधिक 446 करोड़ 33 लाख की एएसएमई भीलवाड़ा व एएसएमई राजसमंद द्वितीय ने 238 करोड़ 52 लाख की वसूली की है। जयपुर, अलवर, बुध्दुनु, टोंक, कोटपुतली, दौसा, मकराना, सिरोंही, बीकानेर, श्रीगंगानगर, चुर, उदयपुर, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा, बिजोलिया, राजसमंद द्वितीय, बूंदी प्रथम, रामगंजपट्टी, झालावाड़ बारां, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर कार्यालयों ने लक्ष्यों के विरुद्ध शतप्रतिशत से भी अधिक राजस्व अर्जित किया है।

# नई पीढ़ी को संस्कारवान बनाना हम सभी की जिम्मेदारी : देवनानी



विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी रिवार को कोटा में विद्या भारती शिक्षा संस्थान के प्रतिभा सम्मान समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित किया।

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए नई पीढ़ी को संस्कारवान बनाना हम सभी की जिम्मेदारी है। नई पीढ़ी को राष्ट्रीयता, देश प्रेम एवं मूल्यों की शिक्षा देकर उनमें देश के लिए समर्पण का भाव उत्पन्न कर हम 2047 तक विकसित भारत का संकल्प पूरा कर सकेंगे। देवनानी रिवार को कोटा में विद्या भारती शिक्षा संस्थान के प्रतिभा सम्मान समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे।

देवनानी ने किया छात्र-छात्राओं का सम्मान

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि आज पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है। देश सक्षम नेतृत्व के हाथों में है। हमारी युवा पीढ़ी में तेरा वैभव अमर रहे मों की सोच पैदा करेंगे तभी हमारी शिक्षा देने के साथ ही संस्कारवान बनाने वाली शिक्षा देने की जरूरत है। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि विद्या भारती में छात्र-छात्राओं को संस्कार दिए जाते हैं और उन्हें अच्छे नागरिक बनाने का

प्रयास किया जाता है। आंतकवाद, जातिवाद, भाई-भतीजावाद एवं भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए आज विद्या भारती के संस्कार की आवश्यकता है। उन्होंने आह्वान किया कि यहां से निकले छात्र डॉक्टर-इंजीनियर बनकर गरीबों की सेवा करने का भाव रखें। स्वयं से पहले राष्ट्र व समाज के प्रति कर्तव्य निर्वहन को प्राथमिकता दें और सब कुछ देश के लिए समर्पण करने का भाव लेकर आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि विद्या भारती से जुड़े प्राचार्य एवं आचार्य नन्हें बच्चों को तराश कर उन्हें संस्कारी बनाएं। देवनानी ने कहा कि 'एक पैड़ू मां के नाम' अभियान को मां के साथ जोड़कर अधिक से अधिक पौधारोपण कर पर्यावरण को बचाने की मुहिम शुरू की गई है। इस मुहिम में सभी भागीदार

बनें। कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने कहा कि विद्या भारती में पढ़ने वाले विद्यार्थी यहां से ऐसे संस्कार लेकर जाएं कि वे पूरे विश्व में देश का नाम रोशन कर सकें। कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा ने कहा कि शिक्षकों का ध्येय शिक्षा के साथ-साथ विशिष्टता का भाव पैदा करना है। यहां से निकले छात्र राष्ट्र सेवा के भाव के साथ विविध क्षेत्रों में अपना योगदान दे रहे हैं।

समारोह में विधानसभा अध्यक्ष एवं अन्य अतिथियों ने विद्या भारती शिक्षा संस्थान, कोटा के तहत संचालित विभिन्न विद्यालयों में दसवीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को स्मृति चिह्न एवं पुरस्कार से सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एलन कोविंग के कार्यकारी निदेशक नवीन माहेश्वरी ने की। इस अवसर पर डॉ. संतोष आनंद सहित विद्या भारती संस्थान से जुड़े पदाधिकारी उपस्थित थे।

## राज्यपाल कलराज मिश्र ने ललिता कोटि कुमकुमारचन महायज्ञ में भाग लिया



जयपुर, (का.सं.)। राज्यपाल कलराज मिश्र रिवार को इंदिरा नगर स्थित पुष्पांजलि परिसर में चल रहे ललिता कोटि कुमकुमारचन महायज्ञ स्थल पहुंचे। उन्होंने देश भर से आए वैदिक विद्यार्थियों और संतों की

उपस्थिति में राष्ट्र की उन्नति एवं गरीब कल्याण के ध्येय से आयोजित महायज्ञ में भाग लेते हुए यज्ञ की भारतीय संस्कृति को जीवन उत्कर्ष का आधार बताया। उन्होंने कहा यज्ञ जीवन का

आलोक पथ है। इससे तन, मन और जीवन ही सिद्ध नहीं होता मानवता का कल्याण होता है। मिश्र ने इस दौरान श्री विद्या का विशिष्ट पूजन भी किया और उपस्थित संत महात्माओं का आशीर्वाद लिया।

## भारत सोलर कॉम्पोनेंट एक्सपो में 3000 करोड़ के बिजनेस में इंडस्ट्री को दिया बूस्टर

जयपुर। राजस्थान सोलर एसोसिएशन की ओर से राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में तीन दिवसीय भारत सोलर कंपोनेंट एक्सपो चल रहा है। एक्सपो में लगभग 3000 करोड़ का बिजनेस हुआ, जो इंडस्ट्री के लिए बूस्टर है। सौर परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए बैंकों से बात करें वियर पर टॉक शो का आयोजन हुआ। इसमें एनर्जी मिनिस्टर हीरा लाल नागर ने सोलर मैनुफैक्चरिंग इंडस्ट्री के लोगों से संवाद किया। लोगों ने मंत्री को इंडस्ट्री के समस्याओं से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि राजस्थान में सोलर इंडस्ट्री को बढ़ाने के लिए न्यूफैक्टर्स के साथ काम किया जाएगा। टॉक शो का उद्देश्य सौर परियोजना योजना के संभावित लाभार्थियों और अग्रणी भारतीय कंपनियों और एनबीएफसी के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत के लिए एक मंच प्रदान करना रहा। महापौर डॉ. सोम्या गुर्जर ने कहा

कि नगर निगम सौर सिस्टम को बढ़ावा देने के लिए हर संभव मदद करने को तैयार है। हमारा लक्ष्य जयपुर को सूर्य सिटी बनाना है। इस अवसर पर आरआरसीएल के एमडी नथुमल, आरएएफ के अध्यक्ष सुनील बंसल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोज गुप्ता, उपाध्यक्ष प्रतीक अग्रवाल, सीईओ नितिन अग्रवाल, कर्नर एन डिजाइन के चेयरमैन अमित परनामी उपस्थित रहे।

राजस्थान सोलर एसोसिएशन अध्यक्ष सुनील बंसल ने बताया कि एक्सपो में सोलर उत्पादन के सभी उपकरण एक छत के नीचे प्रदर्शित किए गए हैं। एक्सपो 8 जुलाई तक चलेगा। दूसरे दिन वीकेंड के कारण विजिटर्स की अच्छी रौनक रही। राजस्थान सोलर एसोसिएशन राज्य में सोलर इंडस्ट्री को बढ़ावा देने के लिए तेजी से कदम बढ़ा रहा है। प्रदेश में गर्मी ज्यादा पड़ती है और यहां बिजली की बहुत जरूरत होती है।

## ओ.पी.जे.एस.यूनिवर्सिटी ने 9 साल में बांटी 1300 फर्जी डिग्रियां

जयपुर। राजस्थान में भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक और डमी अभ्यर्थी बैठकर परीक्षा पास करवाने की धोखली के बाद अब फर्जी डिग्री से नौकरी हाथियाय के खेल का एसओजी ने पर्दाफास किया है। चार दलालों की गिरफ्तारी के बाद एसओजी ने गहराई से जांच की, तो इसकी आंच ओपीजेएस यूनिवर्सिटी को संस्थापक जोगेंद्र सिंह, पहले इसी यूनिवर्सिटी से जुड़े जितेंद्र यादव और ओपीजेएस यूनिवर्सिटी की रजिस्ट्रार रही सरिता कडुडवासरा तक पहुंची। इन तीनों की गिरफ्तारी के बाद अब एसओजी इस गिरोह से जुड़े दलालों के बड़े नेटवर्क पर शिकंजा कसने में जुटी है। साथ ही फर्जी डिग्री से नौकरी हाथियाय वाले अभ्यर्थियों पर भी नेटवर्क कसने की तैयारी है। एस.ओ.जी. ने गिरफ्तार आरोपी जोगेंद्र सिंह, जितेंद्र

यादव और सरिता कडुडवासरा को कोर्ट में पेश किया, जहां से उन्हें 14 जुलाई तक रिमांड पर भेज दिया है। एसओजी की जांच में सामने आया है कि एरोहेक (हरियाना) का रहने वाला जोगेंद्र सिंह साल 2013 से पहले मेरठ की एक निजी यूनिवर्सिटी में काम करता था। वहां भी फर्जी डिग्री बेचने के घोटाले में शामिल रहा। इसके बाद उसे मेरठ, दिल्ली और भिवानी पुलिस ने गिरफ्तार भी किया था। हालांकि, बाद में जमानत पर छूटने पर उसने चुरू के राजगढ़ में ओपीजेएस यूनिवर्सिटी शुरू की, जहां से 9 साल में 1300 से ज्यादा फर्जी डिग्रियां बेचकर करीब 26 करोड़ रुपए बटोरे। अब वो बारां में एक और यूनिवर्सिटी खोलने की तैयारी में था।

फर्जी डिग्रियां मामले में एसओजी की गिरफ्तार में आया दूसरा आरोपी जितेंद्र सिंह भी पहले ओपीजेएस यूनिवर्सिटी से जुड़ा था। बाद में उसने अलवर में पार्टनरशिप में सनराइज यूनिवर्सिटी और गुजरात में पाटन में एमके यूनिवर्सिटी शुरू की। अब वो बूंदी में जीत यूनिवर्सिटी शुरू करने वाला था। इसी मामले में पकड़ी गई सरिता कडुडवासरा भी ओपीजेएस यूनिवर्सिटी की रजिस्ट्रार रह चुकी है। इस यूनिवर्सिटी का हिसाब-किताब भी वही संभालती है। एसओजी की पड़ताल में सामने आया है कि अकेली पीटीआई भर्ती परीक्षा 2022 में ओपीजेएस यूनिवर्सिटी की डिग्री वाले 80 से ज्यादा अभ्यर्थियों का चयन हुआ है। इनकी जानकारी संबंधित विभाग को दी गई है। इसके अलावा भी कई अन्य भर्तियों में फर्जी डिग्री से नौकरी हासिल करने वालों पर एसओजी शिकंजा कसने की तैयारी में है।

## चार चिकित्सा अधिकारियों को नोटिस

जयपुर। सवाई मानसिंह अस्पताल के ब्लड बैंक में प्लाज्मा खराब होने के प्रकरण में जांच दल की रिपोर्ट के आधार पर राज्य सरकार ने 4 चिकित्सा अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। साथ ही जांच में दोषी 6 अधिकारी-कर्मचारियों पर कार्रवाई के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग गुपु-2 एवं 3 को पत्र लिखा है।

अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभा सिंह ने बताया कि प्रकरण को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खीवर ने गंभीरता से लेते हुए जांच करवाने एवं दोषी अधिकारी-कर्मिकों पर नियमानुसार कार्रवाई किए जाने के निर्देश दिए थे। प्रकरण में गठित जांच दल की रिपोर्ट के आधार पर सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य डॉ. राजीव बगरहट्टा, पूर्व अधीक्षक डॉ. अचल शर्मा, आचार्य आईएचटीएम डॉ.

प्रमोदर पचौरी एवं ट्रोमा सेंटर के नोडल अधिकारी डॉ. अनुराग धाकड़ को कारण बताओ नोटिस जारी कर सात दिवस में स्पष्टीकरण मांगा गया है। इन अधिकारियों को प्लाज्मा के रख-रखाव में लापरवाही, अनियमितता एवं पर्यवेक्षणीय लापरवाही के लिए दोषी मानते हुए नोटिस जारी किया गया है।

अनियमितता एवं पर्यवेक्षणीय लापरवाही के लिए दोषी मानते हुए नोटिस जारी किया गया है। इसी प्रकार प्रकरण में अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रकाश चंद्र गोयल एवं डॉ. अखिलेश कुमार को दोषी मानते हुए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग गुपु-2 को नियमानुसार कार्रवाई किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, अनुमोदित टेक्नीकल सुपरवाइजर प्रभु सिंह मण्डीवाल व अमित भारद्वाज तथा अनुमोदित टेक्नीशियन राजकुमार जैन एवं कृष्णा गोपाल अग्रवाल पर कार्रवाई के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग गुपु-3 को पत्र लिखकर निर्देश दिए गए हैं।

## बृहस्पति धाम मंदिर का पाटोत्सव संपन्न

जयपुर। राजस्थान के जयपुर शहर में बृहस्पति धाम मंदिर का पाटोत्सव का कार्यक्रम 7 जुलाई को सुबह 11 बजे डालडा फैक्ट्री ओवर ब्रिज के आगे महारानी फार्म हाउस रोड पर स्थित बृहस्पति धाम मंदिर में प्रांगण में शुरू हुआ। पत्रकार वार्ता में कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बाबूलाल शर्मा ने बताया कि हर साल आयोजित होने वाले इस आयोजन में विशाल संख्या में भक्तजन परिवार के साथ पधार और बृहस्पति देव महाराज का दूध एवं जल से अभिषेक मंदिर के महंत नरेंद्र शर्मा के द्वारा किया गया अभिषेक के बाद भक्तों को प्रसादी बैठकर कराई गई।

## ‘संस्कृत पढ़कर छात्र भी बनेगा आई.ए.एस.’

जयपुर। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो श्रीनिवास वरखेडी के नवीन नवाचार पाठ्यक्रम के क्रम में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में संस्कृत की पढ़ाई के साथ सिविल सर्विस की तैयारी भी कराई जाएगी। यह भारत का पहला विश्वविद्यालय होगा जो संस्कृत में पढ़ाई के साथ-साथ सिविल सर्विस की तैयारी कराएगा। इसके लिए केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के अभी तक सिर्फ दो कैम्पस यानी की जयपुर एवं लखनऊ में बीए ऑनर्स इन संस्कृत एंड सिविल सर्विस स्टडीज (बीए एससीएस) कोर्स तैयार किया है।

## हर घर को प्लास्टिक कैरी बैग्स से मुक्त करने का लक्ष्य हासिल करेंगे : एन.विजय

जयपुर, (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में पूरे राज्य को प्रदूषण मुक्त करने एवं सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग से मुक्त करने के लिए राज्य भर में प्रदूषण नियंत्रण मंडल द्वारा व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। एक ओर जहां वृहद स्तर पर विभिन्न विभागों,   
**■ 'प्रदूषण एवं प्लास्टिक मुक्त राज्य के लिए संकल्पित राज्य सरकार'**



राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल के सदस्य सचिव एन विजय ने कपड़े के थैले बाँटकर प्लास्टिक कैरी बैग्स का उपयोग नहीं करने की शपथ दिलावाई।

स्वयंसेवी संस्थाओं एवं निजी संस्थाओं के सहयोग से पौधारोपण का कार्य किया जा रहा है। वहीं हर घर को प्लास्टिक कैरी बैग्स से मुक्त करने के लिए मंडल के अधिकारियों द्वारा घर-घर जाकर न केवल सिंगल यूज प्लास्टिक के वस्तुएं उपयोग नहीं करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है बल्कि कपड़े के थैले बाँटकर प्लास्टिक कैरी बैग्स का का उपयोग नहीं करने की भी शपथ दिलाई जा रही है। राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल के सदस्य सचिव एन विजय ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की प्रदूषण मुक्त राज्य की संकल्पना को साकार

करने के क्रम में राज्य अग्रसर है और सिंगल यूज प्लास्टिक एवं प्लास्टिक कैरी बैग्स का उपयोग न के बराबर हो इसके लिए सार्थक प्रयास धरातल स्तर पर किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि कार्यालय कार्यों, नियम-कायदे बनाने के साथ उन्हें समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना हमारा मौलिक जिम्मेदारी है जिसके तहत मंडल के अधिकारी और कर्मचारी घर-घर तक इस मुहीम को लेकर जा रहे हैं और कपड़े के थैलों का वितरण कर प्लास्टिक कैरी बैग्स उपयोग नहीं करने के लिए शपथ दिला रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की प्रदूषण एवं प्लास्टिक मुक्त राज्य की

व्यापक एवं दूरगामी सोच को साकार करने के हर स्तर पर हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं। सदस्य सचिव ने कहा कि मंडल के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा घर-घर जाकर कपड़े के थैले वितरित करने की इस मुहिम का एक ही उद्देश्य है कि राज्य के प्रत्येक नागरिक के हाथ में प्लास्टिक कैरी बैग की जगह कपड़े का थैला दिखाई दे वही व्यापारिक संस्थानों एवं दुकानों पर भी कपड़े के थैले ही उपयोग में लिए जाएं। उन्होंने कहा कि प्रयास किया जायेगा कि मंडल की यह मुहिम तब तक जारी रहे जब तक प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में कपड़े का

थैला नहीं आ जाता। इस दौरान अधीक्षक वैज्ञानिक अधिकारी नेहा अग्रवाल के नेतृत्व में जगतपुरा स्थित विहायशी सोसाइटी में कपड़े के थैलों का वितरण किया गया साथ ही प्लास्टिक कैरी बैग्स उपयोग नहीं करने, कचरे का समुचित प्रबंधन करने एवं पर्यावरण संरक्षण करने की शपथ दिलाई गई। इस दौरान मौजूद सोसायटी के वरिष्ठ सदस्यों ने मंडल द्वारा चलाया जा रही मुहिम की सराहना करते हुए कहा कि अन्य लोगों तक मंडल के प्रदूषण मुक्त राज्य के सन्देश को प्राथमिकता से पहुंचाना सुनिश्चित करेंगे।

## दामाद ने ससुराल में की चोरी

जयपुर। गलता गेट थाना इलाके में ऑनलाइन गेमिंग के शौक में नुकसान लगाने पर एक युवक ने अपने ससुराल में ही चोरी की वारदात कर डाली। पुलिस ने चोर को गिरफ्तार कर उसके

पास से सोने का मंगलसूत्र बरामद कर लिया है। पुलिस के अनुसार चोरी के मामले में आरोपी आशीष माधु (31) निवासी श्रीशिव नगर जयसिंहपुरा खोल हार गोविन्द नगर पूर्व ब्रह्मपुरी को गिरफ्तार किया गया है। इस संबंध में बास-बदनपुरा गलतागेट निवासी रुक्मणी देवी ने 2 जुलाई को गलतागेट थाने में मामला दर्ज करवाया था।

## तीन युवकों का अपहरण कर 5-5 लाख रु. मांगे, दो आरोपी गिरफ्तार



रामनगरिया पुलिस ने फिरोती के लिए 3 युवकों का अपहरण करने वाले दो बदमाशों को गिरफ्तार किया।

जयपुर। रामनगरिया थाना पुलिस ने फिरोती के लिए तीन युवकों का अपहरण करने वाले दो बदमाशों को गिरफ्तार कर तीनों अपहृत युवकों को छुड़वा लिया। आरोपियों ने फिरोती के लिए अपहरण किया था और उनके दोस्त से 5-5 लाख रुपयों की मांग की थी। पुलिस ने उनके कब्जे से पिस्तौल बरामद की है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (पूर्व) कावेन्द्र सिंह सागर ने बताया कि रामनगरिया थाना इलाके में शनिवार रात ग्यारह बजे का सवार हथियारबंद बदमाशों ने लोहस विला के मेन गेट के पास से तीन कॉलेज स्टूडेंट तरुण, हर्ष, हिमांशु का अपहरण किया और उनके साथ जमकर मारपीट भी की। इसके बाद

पांच-पांच लाख रुपए की फिरोती मांगी। मौके पर पहुंची पुलिस ने पहले आस-पास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले और शहर में नाकाबंदी करवाई। पुलिस जांच में सामने आया है कि रात करीब 10.45 बजे अटिंगा कार में बैठकर तरुण, हर्ष, हिमांशु और यश जगतपुरा की ओर जा रहे थे। करीब 15 मिनट बाद बदमाशों ने उन्हें रोका था। दो कारों में आए 7-8 बदमाश लाठी-डंडों से लैस थे। स्विफ्ट और अमेज कार में आए बदमाशों के नीचे उतरते ही यश गाड़ी छोड़कर भाग निकला। बदमाशों ने बाकी तीनों को अपहरण कर लिया। तीनों युवक प्राइवेट कॉलेज के स्टूडेंट हैं। बदमाश युवकों की कार को साथ ले गए, लेकिन वे कार को मालवीय नगर

के डी-मार्ट के पास छोड़ गए। बदमाश तीनों युवकों को अपहरण कर जयपुर से सतर किलोमीटर दूर चाकसू के नैन्वा गांव में ले गए। यहां तीनों को अपने-अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को कॉल कर पांच-पांच लाख रुपए की फिरोती मांगवाते हुए पुलिस के देखकर अपहरणकर्ता भाग निकले। पुलिस ने पीछा कर ऋषभ चौधरी निवासी चाकसू और विक्रम सिंह निवासी केकड़ी को पकड़ लिया। पुलिस ने अपहृत तीनों युवकों को भी सकुशल छुड़वाया।

## विवाहिता ने फंदा लगाकर की खुदकुशी

धौलपुरा धौलपुर शहर के थाना निहालगंज क्षेत्र की सीताराम कॉलोनी में एक विवाहिता ने फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। विवाहिता के खुदकुशी की सूचना मिलते ही पुलिस ने पीहर पक्ष को सूचना देते हुए शव को जिला अस्पताल धौलपुर की मोर्चरी में रखवा दिया। जहां पीहर पक्ष की शिकायत पर देहज की खातिर हत्या का मुकदमा करते हुए महिला थाना पुलिस ने मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम कराया गया है।

घटना को लेकर को सीओ सिटी तपेंद्र मीणा ने बताया कि पुलिस को रात को एक महिला द्वारा फंदा लगाकर खुदकुशी की सूचना मिली थी। जिस सूचना के बाद पुलिस ने पीहर पक्ष को सूचना देते हुए शव को जिला अस्पताल धौलपुर की मोर्चरी में रखवा दिया। उन्होंने बताया कि 22 वर्षीय महिला स्नेहा पुत्री श्याम सिंह निवासी लहकपुर की शादी 4 वर्ष पूर्व सीताराम कॉलोनी के रहने वाले युवक मनीष के साथ हुई थी। मृतक महिला के पिता श्याम सिंह ने पुलिस को दी गई शिकायत में ससुराल पक्ष पर देहज की खातिर उनकी बेटी को प्रताड़ित करने के साथ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया है। मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करने पहुंचे महिला थाने के एएसआई बलविंदर सिंह ने बताया कि बबीता की मौत के मामले में पोस्टमार्टम कराया गया है।

## डॉ. सुभाष गर्ग के पिताजी को सांसद व विधायकों ने दी पुष्पांजलि

भरतपुर (निस.)। पूर्व मंत्री व विधायक डॉ. सुभाष गर्ग के पिताजी प्रमुदयाल गर्ग के निधन पर रविवार को राज गाईन में शोक सभा का आयोजन हुआ जिसमें अनेक जनप्रतिनिधियों, विभिन्न समाजों, संगठनों, राजनैतिक दलों, पाषण्डों, पत्रकारों सहित शहर व ग्रामीण क्षेत्र के सैकड़ों लोगों ने पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। सभी ने दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिए दो मिनट का मौन रखकर प्रार्थना की। राज्य के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केन्द्रीय मंत्री व राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष जयन्त चौधरी सहित अन्य मंत्रियों, विधायकों, सांसदों ने शोक संदेश भेजकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। श्रद्धा सुमन अर्पित करने वाले में प्रमुख रूप से सांसद संजना जाटव, धौलपुर-करोली सांसद भजनलाल जाटव, विधायक अमित चाचाण, विधायक रोहित बोहरा, विधायक ऋतु बनावत, पूर्व विधायक लाखन मीणा, पूर्व विधायक विजय बंसल, राजीव गांधी स्टेडी सर्किल के समन्वयक सतीश राय, मेयर अभिजीत कुमार, संभागीय आयुक्त सांवरमल वर्मा, आरएलडी के जिलाध्यक्ष संतोष फौजदार, पूर्व प्रधान निहाल सिंह, प्रधान प्रतिनिधि सतीश सोगरवाल, कांटोस के शहर अध्यक्ष दयाचंद पचौरी, सेवर ब्लॉक अध्यक्ष दीनदयाल जाटव, कांटोस नेता चुनी कानन, पूर्व मेयर रविशंकर धौट, कुम्हेर नगर पालिका चेयरमैन राजीव अठवाल, थाना नगर पालिका विनोद हट्टा, गिरधारी तिवारी, यश अठवाल, बजारी सिंह, एडवोकेट श्रीनाथ शर्मा, गांधी देव, रमेश सैनी, डॉ. प्रेमसिंह कुंदल, उप मेयर गिरौरी चौधरी, ईश्वर सिंह, महेश बंसल, भूमि विकास बैंक के पूर्व अध्यक्ष अमरसिंह, मानसिंह, पार्षद प्रतिनिधि प्रेमपाल सिंह, अपना घर के संस्थापक डॉ. बीएम भारद्वाज, पत्रकार सुरेश फौजदार, प्रमोद कल्याण,

## करोली में स्काउट व गाइड ने मनाया वन महोत्सव

करोली (नि.स.)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड इको क्लब महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय कैलाशदेवी के तत्वाधान में वन महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें अध्यक्षता कर रहे प्रधानाचार्य रजनीश अश्वथी ने कहा कि वन महोत्सव के तहत लगाए गए पौधों की पूर्ण सुरक्षा एवं उन्हें बढ़ा करने का उत्तरदायित्व स्थानीय विद्यार्थियों के स्काउट गाइड एवं स्टाफ ने लिया है।

स्थानीय संघ करोली के सहायक सचिव एवं ट्रेनिंग काउंसलर गणेश चंद शर्मा ने बताया कि राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड इको क्लब महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय कैलाश देवी के तत्वाधान में वन महोत्सव के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि सीओ स्काउट अनिल कुमार गुप्ता एवं अध्यक्षता स्थानीय विद्यालय के प्रधानाचार्य रजनीश अश्वथी ने की इस अवसर पर स्काउट गाइड बालक बालिकाओं को संबोधित करते हुए सी ओ स्काउट ने कहा की एक वृक्ष 100 पुत्र के समान होता है हमें प्रत्येक वृक्ष की सार संभाल कर उससे बड़ा करना है जिससे विद्यालय का वातावरण आनंद मय हो जाए।

सचिव स्थानीय संघ करोली मुकेश कुमार सारस्वत ने बालक बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि वह स्काउट गाइड के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण ऊर्जा संरक्षण नशा

# करोली में धूमधाम के साथ निकली चतुर्मास मंगल प्रवेश की शोभायात्रा

## चतुर्मास के लिए करोली पधारी शासन ज्योति जी महाराज की चातुर्मास मंगल प्रवेश शोभायात्रा करोली शहर के तीन बड़ स्थित एक जैन निवास से शुरू हुई

करोली (नि.स.)। करोली जिला मुख्यालय पर चतुर्मास करने आई एक जैन समाज की साध्वी की मंगल प्रवेश शोभायात्रा धूमधाम के साथ निकली गई जिसमें जैन समाज के महिला पुरुषों ने भाग लिया।

श्वेतांबर पालीवाल जैन समाज की ओर से चतुर्मास के लिए करोली पधारी

■ मंगल प्रवेश शोभा यात्रा के दौरान महिलाएं सिर पर कलश लिए चल रही थी तो वहीं जैन समाज के लोग एक जैसी वेशभूषा में साफा बांधकर चल रहे थे

शासन ज्योति जी महाराज की चातुर्मास मंगल प्रवेश शोभायात्रा करोली शहर के तीन बड़ स्थित एक जैन निवास से बड़ बाजे के साथ शुरू हुई जो ट्रक युनियन



करोली के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरती मंगल प्रवेश शोभा यात्रा।

सर्किल, कलेक्ट्रेट सर्किल, गोशाला, वजीरपुर गेट होते हुए बड़ा बाजार स्थित जैन मंदिर तक पहुंची मंगल प्रवेश शोभा यात्रा के दौरान महिलाएं सिर पर कलश

लिए चल रही थी तो वहीं जैन समाज के लोग एक जैसी वेशभूषा में साफा बांधकर चल रहे थे। इस दौरान कलेक्ट्रेट सर्किल स्थित पदम स्टेड पर प्रदीप जैन, विमला



जैन परिवार कि ओर से जेसीबी मशीन से शोभायात्रा पर पुष्प वर्षा करते हुए शीतल पेय पिलाकर सब का स्वागत किया शोभा यात्रा के पालीवाल जैन मंदिर पहुंचने के बाद मंगल प्रवेश के लिए आई शासन ज्योति जी महाराज ने वर्म का प्रचार प्रसार के लिए प्रवचन देते हुए सड़ मार्ग पर चलने का आन्धान किया।

## नीरज शर्मा होंगे मासलपुर के नए थाना अधिकारी

करोली (नि.स.)। करोली जिला पुलिस अधीक्षक ने पुलिस महकमे में फेरबदल करते हुए करोली यातायात प्रभारी के पद पर कार्यरत नीरज शर्मा को मासलपुर थाना अधिकारी के पद पर लगाया गया है।

पुलिस अधीक्षक कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय ने पुलिस महकमे में फेरबदल करते हुए मासलपुर थाना अधिकारी के पद पर कार्यरत चंचल शर्मा को पुलिस लाइन में भेज दिया है वहीं उनके स्थान पर करोली यातायात प्रभारी के पद पर कार्यरत नीरज शर्मा को मासलपुर थाना अधिकारी लगाया गया है। करोली यातायात प्रभारी का पद रिक्त होने पर पुलिस अधीक्षक कार्यालय में कार्यरत सब इंस्पेक्टर महावीर सिंह को यातायात प्रभारी करोली के पद पर लगाया है।

## करंट आने से युवक की मौत

धौलपुर। धौलपुर शहर के नजदीक स्थित सदर थाना क्षेत्र के पुरानी छावनी गांव में रविवार को करंट की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। युवक घर का कचरा फेंकने के लिए ट्रांसफार्मर के पास गया था जहां ट्रांसफार्मर के पास जमीन गीली होने की वजह से वह करंट की चपेट में आ गया। जानकारी के अनुसार घटना में 25 वर्षीय युवक ललित पुत्र रामनाथ शर्मा निवासी पुरानी छावनी धौलपुर की मृत्यु हुई है।

मृतक मूलतः मत्सुरा बाड़ी का रहने वाला है। जो करीब 20 वर्ष से अपने मामा के यहां गांव पुरानी छावनी धौलपुर में ही रहता है। इसीसे पिता बचपन में ही परिवार को छोड़कर चले गए थे, जो अब तक वापस नहीं लौटे हैं। वहीं माता की भी करीब 6-7 वर्ष पहले बीमारी से मृत्यु हो चुकी है। मृतक युवक ललित 4 भाईयों में सबसे छोटा था। जो राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज धौलपुर से पॉलिटेक्निक की पढ़ाई कर रहा था।



धौलपुर के पुरानी छावनी गांव में रविवार को करंट की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई।

घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मचा हुआ है। मृतक युवक समाजसेवी रिंकू शर्मा छावनी की बुआ का बेटा है। समाजसेवी रिंकू ने बताया कि रविवार दोपहर को युवक ललित घर का कचरा लेकर ट्रांसफार्मर के पास फेंकने के लिए

गया था। वारिश की वजह से ट्रांसफार्मर के आसपास की जमीन गीली होने की वजह से युवक करंट की चपेट में आकर मौके पर ही गिर गया। युवक के जमीन पर गिरते ही मौके से उठाकर जिला अस्पताल धौलपुर पहुंचाया।

## प्रेरणा उत्सव मनाया

गंगपुर सिटी 7 जुलाई। जवाहर नवोदय स्कूल गंगपुरसिटी में प्रेरणा उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर छात्रों को मार्गदर्शन के लिए प्रेरणा संक्षिप्त फिल्म भी दिखाई गई। प्रतिभागिता में चयनित 15 छात्र, 15 छात्राओं का व्यक्तित्व वार्ता के तहत व्यक्तित्व और सांस्कृतिक जागरूकता का परीक्षण किया जाएगा। इसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले दो विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। जिन्हें गुजरात के अहमदाबाद जिले के वडनगर स्थित प्रेरणा स्कूल में जाने का मौका मिलेगा। प्रिंसिपल डॉ. रमेश बाबू ने बताया कि प्रेरणा उत्सव कक्षा नवीं से बारहवीं कक्षा के चयनित छात्रों के लिए एक सप्ताह तक चलने वाला आवासीय कार्यक्रम है।

## कलेक्टर को सौपेंगे ज्ञापन

करोली (नि.स.)। राजस्थान शिक्षक संघ सियाराम के द्वारा प्रदेश भर के सभी संघों के शिक्षकों की विधिसम्मत 25 सूत्रीय मांगों को लेकर आज सोमवार को राजस्थान के मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया जायेगा जिसमें करोली जिले कि समस्त ब्लॉक की शाखाओं, उपशाखाओं कि कार्यकारिणी एवं सदस्यों के द्वारा सामूहिक रूप से आज दोपहर 2:00 बजे जिला कलेक्ट्रेट में एक साथ उपस्थित होकर शिक्षकों कि मांगों के समर्थन में प्रदर्शन किया जायेगा। शिक्षक संघ सियाराम के जिला महामंत्री सुनील गोयल ने बताया कि

संगठन की प्रदेश इकाई के द्वारा चरणबद्ध तरीके से विभिन्न स्तरों पर प्रदेश, जिला एवं ब्लॉक शाखाओं द्वारा राज्य सरकार के मंत्रियों एवं जनप्रतिनिधियों तथा प्रशासनिक अधिकारियों को शिक्षकों कि 25 सूत्रीय मांगों के समर्थन में ज्ञापन देने एवं विभिन्न समस्याओं के तत्काल निराकरण के लिए बड़े स्तर पर राज्या व्यापी आंदोलन शुरू किया जा रहा है। संघ के जिलाध्यक्ष अमरसिंह मीना ने समस्त ब्लॉक उपशाखाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्य शिक्षकों से आज सोमवार को दोपहर 2:00 बजे अधिक से अधिक संख्या में जिला कलेक्ट्रेट, करोली में उपस्थित होने का आन्धान किया है।

## करोली में स्काउट व गाइड ने मनाया वन महोत्सव

करोली (नि.स.)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड इको क्लब महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय कैलाशदेवी के तत्वाधान में वन महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें अध्यक्षता कर रहे प्रधानाचार्य रजनीश अश्वथी ने कहा कि वन महोत्सव के तहत लगाए गए पौधों की पूर्ण सुरक्षा एवं उन्हें बढ़ा करने का उत्तरदायित्व स्थानीय विद्यार्थियों के स्काउट गाइड एवं स्टाफ ने लिया है।

स्थानीय संघ करोली के सहायक सचिव एवं ट्रेनिंग काउंसलर गणेश चंद शर्मा ने बताया कि राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड इको क्लब महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय कैलाश देवी के तत्वाधान में वन महोत्सव के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि सीओ स्काउट अनिल कुमार गुप्ता एवं अध्यक्षता स्थानीय विद्यालय के प्रधानाचार्य रजनीश अश्वथी ने की इस अवसर पर स्काउट गाइड बालक बालिकाओं को संबोधित करते हुए सी ओ स्काउट ने कहा की एक वृक्ष 100 पुत्र के समान होता है हमें प्रत्येक वृक्ष की सार संभाल कर उससे बड़ा करना है जिससे विद्यालय का वातावरण आनंद मय हो जाए।

सचिव स्थानीय संघ करोली मुकेश कुमार सारस्वत ने बालक बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि वह स्काउट गाइड के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण ऊर्जा संरक्षण नशा

## बिहारी जी परिक्रमा मार्ग में 300 पौधे लगाए

भरतपुर (निस.)। पर्यावरण मित्र एक अभियान है पेड़ों और प्रकृति के प्रति लोगों के जागरूक करने का। इस अभियान के अंतर्गत 7 जुलाई रविवार को बिहारी जी परिक्रमा मार्ग किला में 300 पेड़ लगाए गए। इस कार्यक्रम को ज्वाइंटस ट्रायप एवम श्री बैंकि बिहारी जी मंदिर विकास ट्रस्ट के सहयोग से किया गया। इस पौधा रोपण कार्यक्रम में श्री बैंकि बिहारी जी मंदिर आने वाले भक्तों का विशेष सहयोग रहा उनके सहयोग के कारण 300 पेड़ 60 मिनट में ही लग गए। इस कार्यक्रम भरतपुर में पहली बार हुआ है। पर्यावरण मित्र भरतपुर के कुछ पर्यावरण प्रेमियों के द्वारा बनाया गया संगठन है जो पहले अलग अलग प्रकृति के संवर्धन के लिए प्रयास कर रहे थे अब पर्यावरण मित्र का ये प्रयास है की जन जन तक ये जागरण होना चाहिए की पेड़ हमारे जीवन के लिए कितने उपयोगी है पेड़ों के बिना मानव जीवन को कल्पना भी संभव नहीं है। पेड़ लगाने के और उनकी देखभाल की जिम्मेदारी को सरकार के भरोसे छोड़कर हम इस धरती के लिए अपने दायित्व एवं जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। इस भूमि जर्मनी मां के लिए एक बहते हुए नदी जैसी मां का एक एंव हमारे वायुमंडल का तापमान बढ़ रहा है उसका एक मात्र उपाय हमारे पास है के उसका बड़े छायादार पेड़। आज जो 300 पेड़ लगाए गए वो 10 से 15 फुट के नीम, पीपल, मुख्यरूप से लगाए गए।

## हिण्डौन सिटी में पर्यावरण संतुलन के लिए किया दर्जनों पौधारोपण मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. गुर्जर ने पौधारोपण कार्यक्रम की शुरुआत की

हिंडौन सिटी। समीपवर्ती कैमरी गांव के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर पौधारोपण अभियान के तहत दर्जनों पौधे लगाए गए। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ प्रेम सिंह गुर्जर, आयुर्वेदिक प्रभारी डॉ जीतेन्द्र गुर्जर ने पौधारोपण कार्यक्रम की शुरुआत की गयी। इसके बाद अन्य कार्मिकों ने भी विभिन्न किस्मों के पौधे लगाए। पौधारोपण कार्यक्रम में डॉ प्रेम सिंह गुर्जर, डॉ जीतेन्द्र गुर्जर, फार्मासिस्ट वीरेंद्र पंवार, कम्प्यूटर ऑपरेटर सुमन खटाना, निवेन्द्र खटाना, मेल नर्स जितन खटाना, बनवारी लाल सहित कई कार्मिक मौजूद रहे।

वहीं कैमरी पुल की ढाणी में समाजसेवी भूपेन्द्र खटाना अर्थात ने अपना जन्मदिन सार्वजनिक स्थानों पर पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देकर मनयाया। इंडी. भूपेन्द्र खटाना ने पौधारोपण का महत्व बताते हुए कहा कि पर्यावरण के संतुलन के लिए पौधारोपण करना जरूरी है।

सुटीव सरपंच ने पेड़ों को पूजनीय बताते हुए इनकी कटाई पर लगाए गए।



कैमरी गांव के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर पौधारोपण अभियान के तहत दर्जनों पौधे लगाए गए।

रोक लगाने की बात कही। कार्यक्रम में रामनरेश खटाना, भीमसिंह, हैप्पी खटाना, सती अर्थात, महेन्द्र खटाना, अवदेश खटाना, कुलदीप केडी, प्रदीप, हेमसिंह सहित कई युवा मौजूद रहे।

बड़ैडा : पर्यावरण को शुद्ध

रखने के लिए जरूरी है की आस पास हरे भरे पौधे हो लेकिन वर्तमान समय में बढ़ते औद्योगिकीकरण की वजह से लाखों पेड़ पौधों को काटा जा रहा है। लोकेश बड़ैडा ने बताया की ऐसे में पर्यावरण पर इसका साफ असर देखा जा सकता है। हालांकि

इसके बाद युवाओं ने पौधे लगाकर उनकी नियमित भी देखने के साथ सार संभाल का संकल्प ले लिया।

इसके बाद युवाओं ने पौधे लगाकर उनकी नियमित भी देखने के साथ सार संभाल की जिम्मेदारी ली।

## गौमाता के लिए 3 टीन शेडों का लोकार्पण

भरतपुर (निस.)। अपना घर आश्रम एवं नगर निगम के संयुक्त तत्वावधान में संचालित अपना घर नदीशाला व गौशाला का द्वितीय स्थापना दिवस एवं गौमाता के लिए 3 टीन शेडों का लोकार्पण एवं कार्यकारिणी का दायित्व ठाहरण समारोह नगर निगम भरतपुर, के आयुक्त रिश्पाल बुडकर के मुख्य अतिथि एवं आचार्य गणेश गुप्ता, केन्द्र लेखराज सिंह के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। अब तक गौशाला में दो हजार गौमाताओं की आवासीय क्षमता थी वर्तमान में तीन नए शेड बनने के बाद अब गौशाला में दो हजार पांच सौ गौमाताएं रह सकेंगी। निगम आयुक्त रिश्पाल बुडकर व आश्रम पदाधिकारियों द्वारा पौधारोपण किया गया। अपना घर लोहागढ़ गौशाला का प्रतिवेदन विधित्तात्मानंद महाराज द्वारा प्रस्तुत किया गया विस्तार से जानकारी देते बताया कि वर्तमान में गौशाला में कुल 1981 गौवंश है जिनमें 353 नदी, 946 गौमाता, 590 बछड़े, 92 नवजात बछड़े- बछड़ी, 67 दुधारू गाय एवं 87 गर्भवती गौमाताएं गौशाला में आवासरत हैं और प्रतिमाह करीब 25 गौमाताएं बछड़ों को जन्म देती हैं। इनकी सेवा में 32 गौपालक लगे हुए हैं। वहीं संस्था संरक्षक वीरपाल सिंह ने अपना घर आश्रम एवं लोहागढ़ गौशाला की गतिविधियों से विस्तार से अवगत कराया।

कार्यक्रम की शुरुआत गौमाता के पूजन एवं भारत माता के चित्र के सामने आश्रम पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर की गई।



# मुख्यमंत्री ने राजपुरोहित छात्रावास का उद्घाटन किया

जयपुर, 7 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को जयपुर में संतजनों की उपस्थिति में राजपुरोहित ग्लोबल सेंटर ऑफ़ ऐक्सिलेंस (राजपुरोहित छात्रावास) का फीता काटकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राजपुरोहित समाज शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस छात्रावास का निर्माण शिक्षा के क्षेत्र में समर्पण और सामाजिक सरोकार की सच्ची मिसाल है। यह छात्रावास युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए मजबूत आधार प्रदान करेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि छात्रावास में विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थी साथ रहते हैं, जिससे बेहतर संवाद स्थापित होता है और उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। मुख्यमंत्री ने छात्रावास परिसर का अवलोकन भी किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा व्यक्ति और समाज के विकास का मुख्य आधार है। शिक्षा से ज्ञान प्राप्त कर कोशल का विकास होता है, जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता विकसित होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा हमें आत्मनिर्भर बनाती है और बेहतर जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करती है। युवा वर्ग भारत का भविष्य है, अच्छी शिक्षा हासिल कर वह राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली सरकार ने हमारी युवा शक्ति को निराशा की गर्त में धकेल दिया था। पेपर लीक की घटनाओं से कड़ी मेहनत करने वाले इमानदार विद्यार्थियों का मनोबल टूट गया था। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार बनते ही पेपर लीक के मामलों की जांच



मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जयपुर में राजपुरोहित छात्रावास का उद्घाटन किया। इस सार्वजनिक कार्यक्रम में संतजनों की भी उपस्थिति रही।

के लिए एसआईटी गठित की गई। भर्ती परीक्षाओं में पेपर लीक व अन्य अनियमितताओं के संबंध में एसआईटी ने ठोस कार्रवाई करते हुए 108 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं के सपनों को तोड़ने वालों को छोड़ेंगे नहीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि युवा हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्राथमिकता में शामिल हैं। उन्होंने युवा शक्ति को राष्ट्रशक्ति के रूप में पहचान कर उनके लिए अनेक कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री शिक्षा प्रणाली को रोजगार-मुख्य बनाने, युवाओं को 21 वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने लायक बनाने और उन्हें वैश्विक नागरिक के रूप में तैयार करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-

2020 लेकर आए हैं। शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 2014 के बाद देश में उच्च शिक्षा संस्थानों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने शिक्षा के बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और छात्रवृत्ति जैसी सुविधाएं उपलब्ध करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। प्रदेश के प्रत्येक संभाग में राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी और राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंस स्थापित किए जा रहे हैं। तकनीक से जुड़े नए विचारों को प्रोत्साहित करने के लिए अटल इनोवेशन स्ट्रैटिजी एंड एक्सीलेंस शुरू कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार राजस्थान में

खेल आधुनिकीकरण मिशन शुरू कर रही है, जिससे प्रदेश की खेल प्रतिभाएं ओलम्पिक तक पहुंच सकें। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा युवा शक्ति को राज्य के विकास में सहभागिता बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। प्रदेश के युवाओं को रोजगार देने के लिए इस वर्ष लगभग 70 हजार पदों पर भर्तियां की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को निजी क्षेत्र में करियर निर्माण में मार्गदर्शन देने के लिए प्रदेश के समस्त संभाग मुख्यालयों पर युवा साथी केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि 21 वीं सदी भारत की होगी। उन्हें पूर्ण विश्वास है

- अच्छी शिक्षा से युवा बनें आत्मनिर्भर और बेहतर जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करें : भजनलाल शर्मा
- मुख्यमंत्री ने कहा कि जो 70 हजार पदों पर भर्तियों का काम चल रहा है उनसे युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर मिलेंगे।

कि इस लक्ष्य को युवा अपने आत्मबल, समर्पण और शक्ति से हासिल करेंगे। उन्होंने कहा कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए नागरिक कर्तव्यों का पालन करें एवं केन्द्र तथा राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाएं। शर्मा ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारम्भ किए गए 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए एक पेड़ अवश्य लगाएं। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने भी कल्पवृक्ष का पौधारोपण किया।

इस अवसर पर वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा, जयपुर सांसद मंजू शर्मा, विधायक गोपाल शर्मा, छान सिंह राजपुरोहित, प्रशांत शर्मा तथा संत तुलसारामजी महाराज, निर्मलदास महाराज, आत्मानंद सरस्वतीजी महाराज सहित युवा शक्ति एवं बड़ौ संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

# सतीश पूनिया का बाड़मेर आगमन पर जोरदार स्वागत

पूनिया ने बाड़मेर सर्किट हाउस में जाट समाज के छात्रों को संबोधित करते हुए लोकसभा में हिन्दुओं के प्रति राहुल गांधी के बयान की तीखी आलोचना की

बाड़मेर, 7 जुलाई (नि.सं.)। राजस्थान भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष व हरियाणा प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया रविवार को एक दिवसीय कार्यक्रम के तहत बाड़मेर प्रवास पर पहुंचे। पूनिया बाड़मेर जिले के गुडामालानी में आयोजित होने वाले जाट समाज के छात्रावास कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पहुंचे।

कार्यक्रम में शामिल होने से पहले सर्किट हाउस में भाजपा कार्यकर्ताओं ने पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया का साफा, मालाएं व पट्टा ओढ़ाकर भव्य स्वागत किया। इसके बाद पत्रकार वार्तालाप की। पूर्व प्रदेशाध्यक्ष व हरियाणा प्रभारी सतीश पूनिया ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए राहुल गांधी पर सवाल खड़े किए। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा हिंदुओं को लेकर दिए गए बयान पर बोलते हुए भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने कहा कि, अभी भी कई नेता परिपक्व नहीं हुए हैं उसका पैमाना राहुल गांधी है। राहुल गांधी पर तंज कसते हुए कहा कि उनकी गाड़ी पटरी पर दौड़ते- दौड़ते कब उतर जाए इसका कुछ अंदा-पता

पूनिया ने राहुल गांधी पर तंज कसते हुए कहा कि उनकी गाड़ी पटरी पर दौड़ते-दौड़ते कब उतर जाये इसका कुछ अंदा-पता नहीं है, उनका हिन्दुओं के खिलाफ दिया गया यह बयान पटरी से गाड़ी उतर जाने जैसा ही है।

नहीं है और उनका यह बयान पटरी से गाड़ी उतरने जैसा ही है। पूनिया ने कहा कि लोगों ने कहा कि राहुल गांधी ने नेता प्रतिपक्ष के नाते अच्छा भाषण दिया पर एक कमी छोड़ दी। उन्होंने आगे बोलते हुए कहा कि किसी व्यक्ति, समाज या फिर दल विशेष के लिए कह सकते हो, लेकिन पूरे हिन्दू समाज को बोला की यह

हिंसा करते हैं। पूनिया ने कहा कि मुझे लगता है कि इसमें कहीं ना कहीं विदेशी ताकतों का हाथ है। पूनिया ने कहा कि इस तरह का बयान कोई अपरिपक्व राजनेता ही दे सकता है। उनको देश से माफी मांगनी चाहिए। पूनिया ने राजस्थान की पूर्ववर्ती गहलोत सरकार को खर्ची की सरकार बताया। पूनिया ने ये भी कहा कि विधानसभा में हंगामा कर कांग्रेस पेपर लीक और करणन के मुद्दे को पटकना चाहती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राज में आज भारत पूरे विश्व में अपना डंका बजा रहा है। विकास की रफ्तार की तरफ बढ़ रहा है। विश्व में भारत की साख बढ़ी है। मोदी सरकार व राजस्थान सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से गरीब व आमजन को लाभ मिल रहा है। प्रेस वार्तालाप में जिलाध्यक्ष दिलीप पालीवाल, पूर्व जिलाध्यक्ष स्वर्णसिंह खार, विधायक आदूराम मेहवाल, डॉ प्रियंका चौधरी, जिला प्रवक्ता रमेशसिंह इन्दा, आई.टी. प्रेदेश सह संयोजक दीपक कडुवासरा, जिला महामंत्री रणवीरसिंह भादू उपस्थित रहे।

# गोवा में लैण्डस्लाइडिंग में फंसे 80 पर्यटक

पणजी, 7 जुलाई। देश के अलग-अलग हिस्सों में बीते कुछ दिनों से मध्यम से लेकर तेज बरसत हो रही है। जोदार बारिश के चलते कहीं पर भूस्खलन हुआ है तो कहीं बाढ़ की नौबत आ गई है। गोवा के सतारी तालुका में पाली वाटरफॉल में रविवार को भारी बारिश के कारण अचानक जलस्तर बढ़ गया। इसके चलते वहां पर 80 पर्यटक फंस गए थे जिन्हें बचा लिया गया है। अधिकारियों ने बताया कि अग्निशमन और आपातकालीन सेवाकार्मियों की मदद से फंसे हुए लोगों को बचाया गया। जलप्रपात तक पहुंचने के लिए एक नदी पार करनी पड़ती है। रविवार होने के कारण सुबह जलप्रपात पर बड़ी संख्या में लोग जुट गए। भारी

ये पर्यटक सतारी तालुका के एक वॉटरफॉल में रविवार की छुट्टी मनाने पहुंचे थे तभी अचानक से उस स्थान पर जल स्तर बहुत बढ़ गया।

बारिश के बीच दोपहर जलप्रपात में पानी का बहाव अचानक बढ़ने से वहां मौजूद लोग फंस गए। पुलिस अधीक्षक अक्षत कौशल ने बताया, 'पाली जलप्रपात से सभी 80 लोगों को बचा लिया गया है। किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। बचाव अभियान गोवा अग्निशमन और आपातकालीन सेवाओं के साथ मिलकर चलाया गया।' अधिकारियों के अनुसार, फंसे लोगों की ओर से बालपोई

थाने को सूचित करने और मदद मांगने के बाद बचाव अभियान शुरू हुआ। एक अन्य घटनाक्रम में, राज्य शिक्षा विभाग ने लगातार बारिश के मद्देनजर सोमवार को स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिया है। छुट्टी छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने मंगलवार तक गोवा के लिए रेड अलर्ट घोषित किया है। हिमाचल प्रदेश के शिमला में रोहना के पास राष्ट्रीय राजमार्ग 707 अवरुद्ध हो गया है। क्षेत्र

में भारी बारिश के बाद भारी भूस्खलन की घटना हुई। इसके कारण हाटकोटी और पांवटा साहिब को जोड़ने वाला राजमार्ग बंद कर दिया गया है। पहाड़ी का एक बड़ा हिस्सा सड़क पर गिर गया, जिससे बड़ी-बड़ी चट्टानें निकल गईं और मार्ग बाधित हो गया। हाल की भारी बारिश के कारण पूरे हिमाचल प्रदेश में 80 से अधिक सड़कें बंद हो गई हैं जिनमें मंडी, कुल्लू, शिमला, सिरमौर और कांगड़ा जिले सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। शिमला मौसम कार्यालय ने अगले सप्ताह 13 जुलाई तक भारी बारिश, तूफान और बिजली गिरने की भविष्यवाणी करते हुए ये लो अलर्ट जारी किया है।

## गंगानगर शहर बारिश से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) मिल की भूमि के पास रेलवे अण्डर पास में पानी भर गया। पानी के कारण कुछ वाहन चालकों ने ओवरब्रिज से निकलना बेहतर समझा। जबकि कई वाहन अण्डर पास में पानी होने बावजूद उसमें से निकलते रहे। पिछले एक महीने से जिला प्रशासन बार बार नगर परिषद और यू.आई.टी. को बरसाती पानी निकासी से निपटने के लिए कड़े प्रबंधन करने के निर्देश दे रहा था लेकिन नगर परिषद और यू.आई.टी. ने सिर्फ औपचारिकताएं निभाईं। बारिश के कारण अनेक स्थानों पर पानी सड़कों और मोहल्लों में एकत्र हो गया। नगर परिषद की ओर से पानी की सुचारू

निकासी के लिए जेसीबी मशीनें, डंपर, सुपर सकर मशीन, पंप सेट भेजने पड़े। मानसून से पहले शहर के नालों की सफाई व्यवस्था की पोल रविवार की फिर खुली। बारिश के दौरान नालों के कच्चे, गंदगी व सील्ट से अटे होने के कारण नाले उफान पर रहे। नालों का कच्चा व गंदगी सड़कों पर फैलता रहा। कई स्थानों पर सीवर जाम के कारण चैबर उफान पर रहे। चैबरों से पानी निकलता रहा। जिले के कई इलाकों में खूब बरसात हुई है। इससे खेतों में सूख रही फसलों को फायदा होगा। वहीं उमस से राहत मिली है। जिला प्रशासन के कंट्रोल रूम के अनुसार कई जगह ज्यादा बरसात हुई है तो वहीं कहीं कम बरसात हुई है।

## कांग्रेस विधायक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) होटल मेरियट में राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली की अध्यक्षता में शाम 4 बजे विधायक दल की बैठक होगी। जिसमें राजस्थान विधानसभा के आगामी बजट सत्र को लेकर महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की जाएगी तथा जनहित के मुद्दों को उठाने हेतु रणनीति तैयार होगी। बैठक के बाद शाम 5 से 6 बजे तक नवनिर्वाचित विधायकों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन होगा। चतुर्वेदी ने बताया कि शाम 7 बजे राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटयासरा की अध्यक्षता में राजस्थान के प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा एवं कांग्रेस तथा इंडिया गठबंधन व बाप के नव निर्वाचित सांसदों का स्वागत समारोह पूर्वक किया जाएगा।

## महिला क्रिकेटर्स ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) उसने शरीर का मूल्यांकन करने के बहाने नाबालिग लड़कियों की नन तस्वीरें खींची और उनका यौन उत्पीड़न किया। आरोपी के खिलाफ पुलिस ने पोक्सो की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। जानकारी के अनुसार, केरल महिला क्रिकेट टीम के पूर्व कोच मनु को महिला खिलाड़ियों की शिक्षायत के आधार पर पुलिस ने दो दिन पहले ही तिरुवनंतपुरम से गिरफ्तार किया था। अभी वो न्यायिक हिरासत में है। पुलिस जांच में आरोपी के खिलाफ नए-नए खुलासे सामने आए हैं। पुलिस ने आरोपी मनु के खिलाफ यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है।

## राहुल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) राहुल गांधी का फिर राज भवन जाने का कार्यक्रम है और उसके बाद वह प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन को भी संबोधित करेंगे।

# शिवसेना नेता के बेटे की कार से टक्कर में स्कूटी सवार महिला की मौत

मुंबई, 7 जुलाई। रविवार सुबह मुंबई के वली इलाके में शिवसेना के एक नेता के बेटे ने अपनी बी.एम.डब्ल्यू. कार से दोपहिया वाहन सवार महिला को टक्कर मार दी। जिसमें महिला की मौत हो गई, जबकि उसका पति घायल हो गया। हादसे के बाद पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है। इस हादसे में नई जानकारी सामने आई है। ऐसा पता लगा है कि आरोपी मिहिर शाह हादसे से कुछ देर पहले अपने दोस्तों के साथ बार गया था। जहां शराब पी गई थी। पुलिस हालांकि मामले की जांच कर रही है कि क्या हादसे के वक्त मिहिर नशे में था? पुलिस को संदेह है कि फरार आरोपी मिहिर शाह घटना के वक्त नशे में था। वह अभी फरार है और उसकी तलाश की जा रही है। वली थाने के

शिवसेना नेता का बेटा एवं आरोपी मिहिर शाह एक्सिडेंट से कुछ देर पहले अपने दोस्तों के साथ बार गया था, जहां जमकर शराब पी थी, शराब पीने की बात सार्वजनिक होने के बाद लोगों का गुस्सा फूट पड़ा है।

अधिकारी ने बताया कि कार के मालिक और आरोपी के पिता राजेश शाह और उसमें सवार राज रजेंद्र सिंह बिदावत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और उन्हें हिरासत में लिया गया है। राजेश शाह सीएम एकनाथ शिंदे की पार्टी शिवसेना के नेता हैं। इस बीच, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि कानून सभी के लिए बराबर है और किसी को बख्शा नहीं जाएगा। यह घूटने पर कि क्या इस दुर्घटना में शामिल व्यक्ति शिवसेना के एक नेता का बेटा है, इस पर शिंदे ने कहा, "कानून सभी के लिए बराबर है

और सरकार हर मामले को एक ही नजरिए से देखती है। इस दुर्घटना के लिए कोई अलग नियम नहीं होगा। सब कुछ कानून के अनुसार किया जाएगा।" बार के मालिक करण शाह के मुताबिक, मिहिर शाह शनिवार देर रात 11:00 बजे जुहु में वॉथस ग्लोबल तापस बार में अपने दोस्तों के साथ पार्टी कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मिहिर शनिवार रात 11:08 बजे मर्सिडीज में अपने दोस्तों के साथ बार में आया था। उनके साथ कोई महिला नहीं थी। रात 1:40 बजे बिल का भुगतान करने के बाद वे मर्सिडीज कार में चले गए।

# शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कांग्रेस को खुला चैलेंज दिया

दिलावर ने कहा, माँ का दूध पिया है तो फिर से कश्मीर में धारा 370 लगाकर दिखाओ

बगड़, 7 जुलाई (नि.सं.)। भाजपा के फायर ब्रैंड लीडर और सुबे के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कांग्रेस को खुला चैलेंज दिया है। मदन दिलावर ने कांग्रेस को चैलेंज किया कि यदि माँ का दूध पिया है तो वे कश्मीर में फिर से 370 धारा लागू करके दिखाएं।

दरअसल रविवार को शिक्षा मंत्री झुंझुनू के दौर पर रहे, इस दौरान वे बगड़ कस्बे में पहुंचे। जहां पर नगरपालिका चेयरमैन गोविंद सिंह राठौड़ की अगुवाई में दिलावर का स्वागत किया गया।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा देश का अपमान किया है। कश्मीर में देशवासी भारत माँ के जयकारे नहीं लगा सकते थे। अपना लिंग नहीं लहरा सकते थे। हिंदू भगवान श्रीराम की जय बोलते तो उन्हें गोलियों से मार दिया जाता था। पाकिस्तान का युवक कश्मीर की लड़की से शादी कर उसकी संपत्ति में हिस्सेदार हो जाता था लेकिन हिंदुस्तानी युवक

मदन दिलावर रविवार को झुंझुनू प्रवास पर रहे। जहां विभिन्न भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया। दिलावर ने कहा कि, एक समय था जब कश्मीर में राम का नाम लेने वालों को गोलियों से मार दिया जाता था, कोई पाकिस्तानी युवक कश्मीरी लड़की से विवाह करके भारतीय नागरिक बन जाता था लेकिन अब वहां के हालात बदल चुके हैं।

यदि कश्मीर की लड़की से शादी कर लेता तो लड़का का हिस्सा खत्म हो जाता था। कांग्रेस ने 370 की धारा की आड़ में आतंकवादियों को शरण दी और बढ़ावा दिया। अब जब भाजपा ने 370 की धारा हटा दी है। तो कांग्रेस धमकी दे रही है कि वह चीन के साथ मिलकर कश्मीर में फिर से 370 धारा लागूएगी। लेकिन मैं कांग्रेसियों से कहना चाहता हूँ कि यदि उन्होंने अपनी माँ का दूध पिया है तो कश्मीर में फिर से 370 लागू करके

दिखाए। इस मौके पर दिलावर ने अधिक से अधिक पौधे लगाने का आह्वान किया। मंच पर भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच, बगड़ नगरपालिका चेयरमैन गोविंद सिंह राठौड़, भाजपा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य विरभर पूनिया तथा भाजपा नेता राजेंद्र भांबू समेत अन्य मौजूद थे। श्री चावो मंदिर परिसर स्थित चावो वीरो अतिथि सदन में हुए कार्यक्रम में दादूद्वारा के महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी अर्जुनदास महाराज का सानिध्य रहा।

वहीं चेयरमैन गोविंद सिंह राठौड़ ने स्वागत भाषण देते हुए कस्बेवासियों की ओर से शहीद प्रशांत बुंदेला राजकीय स्कूल में कला, वाणिज्य व जीव विज्ञान संकाय स्वरूप कल्पाने की मांग की। मंत्री दिलावर ने अभिनव प्रगति समिति की ओर से कस्बे का प्रतिभावन छात्र-छात्राओं का सम्मान किया। शिक्षाविद महेंद्र शास्त्री ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस मौके पर कुलदीपसिंह कालीपहाड़ी, वीरेंद्र सिंह राठौड़, विकास खटौड़, बिरजूसिंह शेखावत, निरंजन आल्हा, उमा पुरोहित, सरजनी चौधरी, चंदगीराम सैनी आदि मौजूद थे। अभिनंदन कार्यक्रम के बाद कार्यक्रम संयोजक व मंत्री के सहपाठी श्रवणसिंह शेखावत के घर पर लंच के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् महात्मा ज्योतिबा फुले सामुदायिक भवन अशोकनगर में मंत्री दिलावर ने पौधारोपण किया।

श्री नरेंद्र मोदी  
माननीय प्रधानमंत्री

मुख्यमंत्री  
वृक्षारोपण  
महा अभियान  
2024

श्री भजनलाल शर्मा  
माननीय मुख्यमंत्री

## हरियाली का सृजन, हर घर वृक्षारोपण

— प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के अभियान 'एक पेड़ माँ के नाम' से प्रेरित —

### राजस्थान सरकार का पर्यावरण संरक्षण के प्रति ऐतिहासिक कदम

## वृक्षारोपण महाअभियान 2024

“आप सभी से आग्रह है कि इस मानसून में एक पौधा अपनी पूज्य 'माँ' के नाम से रोपित कर उसे पारिवारिक सदस्य के रूप में स्वीकार करें और 'हरियाली राजस्थान, समृद्ध राजस्थान' के संकल्प को साकार करें।”

-भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री

**1 करोड़ पौधों का वितरण एवं रोपण**

**20 नगर वन और 33 लव कुश वार्डिका, 80,000 हेक्टेयर वन क्षेत्र पर वृक्षारोपण**

नर्सरी देखने और पौधा खरीदने के लिए QR कोड को स्कैन करें

**#एक\_पेड़\_माँ\_के\_नाम**

**माँ के नाम एक पेड़ लगाएं, हरे-भरे राजस्थान के सपने को साकार बनाएं**

**वन विभाग, राजस्थान**